History (इतिहास)

Part – A
2 MARKS

RAS 2016 MAINS (GS-I)

निम्न प्रश्नों के उत्तर 15-15 शब्दों में दीजिए।

1. What is the significance of Ghosundi Inscription?
घोसुण्डी अभिलेख का क्या महत्त्व है?
- द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का यह लेख नगरी (चित्तौड़) के निकट घोसुण्डी गाँव से प्राप्त हुआ।
- यह राजस्थान में वैष्णव या भागवत धर्म के प्रचलन की जानकारी देने वाला प्राचीनतम अभिलेख है।
- इस अभिलेख में राजा सर्वतात द्वारा किए गए अश्वमेघ यज्ञ का उल्लेख मिलता है।
- यह ब्राह्मी लिपि और संस्कृत भाषा में लिखा गया है।

2. Write the name of any two 'atheistic' religious sects of India other than Buddhism and Jainism.
भारत में बौद्ध एवं जैन धर्म के अतिरिक्त किन्हीं अन्य दो "अनीश्वरवादी" धार्मिक सम्प्रदायों के नाम लिखिए।
- चार्वाक सम्प्रदाय (भौतिकवादी)।
- आजीवक सम्प्रदाय (नियतिवादी)।

3. Mention any two Persian works written during the reign of Akbar.
अकबर के काल में लिखे गए दो फारसी ग्रन्थों का उल्लेख कीजिए।
- अबुल-फजल – अकबरनामा या आइन-ए-अकबरी।
- निजामुद्दीन अहमद – तबकात-ए-अकबरी।

4. Who was known as 'Frontier Gandhi'? Which party was formed by him?
"सीमान्त गाँधी" के नाम से कौन प्रसिद्ध था? उन्होंने किस दल का गठन किया?
- 'सीमान्त गाँधी' के नाम से खान अब्दुल गफ्फार खान प्रसिद्ध है। इन्होंने 'खुदाई खिदमतगार' नामक संगठन की स्थापना की, इसे 'लाल कुर्ती दल' के नाम से भी जाना जाता है।

5. Expalin the meaning of the term 'Whiteman's Burden'.
'श्वेतजाति पर भार' वाक्यांश का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
- श्वेत जाति पर भार से आशय है कि असभ्य संसार को सभ्य बनाना, श्वेत जाति का दायित्व (Burden) है।
- इंग्लैण्ड ने साम्राज्यवादी प्रसार को इस सिद्धांत पर न्यायोचित ठहराया।

RAS 2016 SPECIAL MAINS (GS-I)

1. Define the Tyaga Custom of Rajasthan.
राजस्थान की त्याग-प्रथा को परिभाषित कीजिए।
- राजपूत जाति में विवाह के अवसर पर प्रदेश के दूसरे राज्यों से चारण, भाट, ढोली जाति द्वारा लड़की वालों से ली जाने वाली दान–दक्षिणा 'त्याग प्रथा' कहलाती है।
- इस प्रथा को सर्वप्रथम 1841 ई. में जोधपुर के महाराजा मानसिंह द्वारा गैर–कानूनी घोषित किया गया।

2. Write down any two attributes of 'Dancing Girl' statuette of Indus Valley Civilization.
सिंधु घाटी सभ्यता की 'नर्तकी प्रतिमा' की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त काँस्य निर्मित 'नर्तकी प्रतिमा' भावाभिव्यक्ति एवं शारीरिक ऊर्जा से ओतप्रोत, ढलाई कला का सर्वोत्तम नमूना है।
- यह मूर्ति 4 इंच, रंग सांवला, लगभग निर्वस्त्र तथा इसकी बाँई भुजा चूड़ियों से ढकी हुई है।

3. Who was Makkhaliputra Gosal?
मक्खलिपुत्र गोशाल कौन था?
- मक्खलिपुत्र गोशाल ज्ञान प्राप्ति से पूर्व महावीर स्वामी का शिष्य था।
- बाद में इन्होंने अलग होकर आजीवक संप्रदाय (नियति बाद) की स्थापना की।
- यह महावीर स्वामी एवं भगवान बुद्ध के समकालीन थे।

4. What was Mewar Pukar?
'मेवाड़ पुकार' क्या था?
- आदिवासियों के मसीहा मोतीलाल तेजावत के द्वारा एकी आन्दोलन के दौरान आदिवासियों से जुड़े 21 सूत्रीय माँगपत्र को मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह को प्रस्तुत किया गया, जिसे 'मेवाड़ की पुकार' कहा जाता है।
- इन 21 माँगों में से 3 माँगों (वन संपदा, बैठ–बेगार और जंगली सुअरों की हत्या से संबंधित) को अस्वीकार कर दिया गया।

5. Who was the editor of Mirat-ul-Akhbar?
मिरातुल अखबार के संपादक कौन थे?
- मिरातुल अखबार के संपादक राजा राममोहन राय थे। इस अखबार का सर्वप्रथम प्रकाशन 12 अप्रैल, 1822 को हुआ। यह एक साप्ताहिक समाचार पत्र था।

RAS 2018 MAINS (GS-I)

1. Which three sacred texts of ancient India are termed 'Prasthan Trayi'?
प्राचीन भारत के किन तीन ग्रन्थों को प्रस्थान त्रयी' कहा जाता है?
- प्राचीन भारत के उपनिषद् , श्रीमद् भगवद्-गीता और ब्रह्मसूत्र को सम्मिलित रूप से 'प्रस्थानत्रयी' कहा जाता है।

2. Briefly describe the "Arjun's Penance" sculpture.
'अर्जुन की तपस्या' प्रतिमा का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
- 'अर्जुन की तपस्या' प्रतिमा महाबलीपुरम (तमिलनाडु) में स्थित है, जो सातवीं-आठवीं शताब्दी में निर्मित हुई थी। यह विश्व का सबसे बड़ा व प्राचीनतम प्रतिमा फलक है। कुछ विशेषज्ञ इसे गंगावतरण के प्रकरण से जोड़ते हैं। यह स्मारक समूह यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल भी है।

3. Describe the text "Vishva Vallabh" in brief.
'विश्व वल्लभ' ग्रंथ का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
- महाराणा प्रताप के दरबारी पंडित चक्रपाणि मिश्र द्वारा 1577 ई. में 'विश्ववल्लभ' नामक संस्कृत ग्रंथ की रचना की गई। प्राथमिक संसाधन के रूप में वराहमिहिर के ग्रंथ 'वृहत्संहिता' का उपयोग करके चक्रपाणि ने यह ग्रंथ विज्ञान एवं तकनीकी विषय पर लिखा।

4. Who were Doongji and Jawaharji?
डूंगजी और जवाहरजी कौन थे?
- डूंगरजी, जवाहर जी (चाचा-भतीजा) बठोठ-पाटोदा, सीकर के ठाकुर थे। ये दोनों शेखावाटी क्षेत्र में धनी लोगों से लूटा हुआ धन गरीबों एवं जरूरतमंदों में बाँट दिया करते थे, इस कारण जवाहरजी को आगरा के दुर्ग में कैद किया गया था।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

5. **Define the European Enlightenment of 18th century.**
18वीं शताब्दी के यूरोपियन प्रबोधन को परिभाषित कीजिए।

- प्रबोधन प्रखर बुद्धि की ओर संकेत करता है, जिसमें प्रबुद्ध व्यक्ति सत्य को तर्क और बुद्धि की कसौटी पर जाँचकर स्वीकार या अस्वीकार करता है। इसकी दृष्टि परंपरा के बजाय परिवर्तन पर थी जो डेकार्ट के संदेहवाद, लॉक के अनुभववाद और न्यूटन के विज्ञानवाद के समायोजन से विकसित हुई।

RAS 2021 MAINS (GS-I)

1. **Name any four out of six orthodox schools of Indian Vedic Philosophy.**
भारतीय वैदिक दर्शन की परम्परागत (रूढ़िवादी) छः शाखाओं में से किन्हीं चार का नामोल्लेख कीजिए।

- भारतीय दर्शन में षड्दर्शन प्रसिद्ध हैं, जिन्हें आस्तिक दर्शन भी कहा जाता है-

सांख्य	–	कपिल
योग	–	पतंजलि
न्याय	–	गौतम
वैशेषिक	–	कणाद
मीमांसा	–	जैमिनी
वेदान्त	–	वेद व्यास

2. **What is Ravanhatha?**
रावण हत्था क्या है?

- राजस्थान का प्राचीनतम तत् वाद्य यंत्र 'रावण हत्था' नारियल के कटोरे पर बकरे का चमड़ा मढ़कर बनाया जाता है और गज से बजाया जाता है, जिसके तार घोड़े की पूंछ के बाल से बने होते हैं। पाबूजी की फड़ इसी वाद्य यंत्र के साथ भोपों द्वारा बांची जाती है।

3. **Describe the Suharwardi Sufi Silsilah.**
सुहरावर्दी– सूफी सिलसिला का वर्णन कीजिए।

- स्थापना – बगदाद में शहाबुद्दीन सुहरावर्दी द्वारा
  भारत में – शेख बहाउद्दीन जकारिया द्वारा
  प्रसिद्ध सूफी – जलालुद्दीन सुर्ख बुखारी जिन्होंने 36 बार मक्का की यात्रा की।
- सुहरावर्दी सिलसिले के लोग चिश्ती सिलसिले के विपरीत भोग विलास का जीवन जीते थे।

4. **Highlight the role of Aruna Asaf Ali in the Quit India Movement.**
भारत छोड़ो आंदोलन में अरूणा आसफ अली की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

- सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मौलाना अबुल कलाम आजाद की गिरफ्तारी के बाद अरूणा आसफ अली ने भूमिगत गतिविधियों के माध्यम से आंदोलन का नेतृत्व किया। इसी समय अरूणा आसफ अली कांग्रेस रेडियो से भी जुड़ी तथा भूमिगत कार्रवाइयों में सुचेता कृपलानी और उषा मेहता भी महत्त्वपूर्ण सदस्य थीं।

5. **Where did Leonardo De vinci paint his famous painting "The Last Supper"?**
लियोनार्डो द विंची ने अपना प्रसिद्ध चित्र 'द लास्ट सपर' कहाँ पर चित्रित किया था?

- 15वीं शताब्दी में प्रसिद्ध इतालवी चित्रकार लियोनार्डो द विंची द्वारा बनाया गया चित्र द लास्ट सपर, जिसका अर्थ है – अंतिम भोजन।
- यह चित्र मिलान शहर में Santa Maria Delle Grazic नामक एक चर्च के भोजन कक्ष की दीवार पर चित्रित है।

इस चित्र में जीजस को सूली पर चढ़ाए जाने से पहले उनके 12 शिष्यों के साथ अंतिम भोजन करते हुए दिखाया गया है। इस चित्र में जीजस अपने शिष्यों से कह रहे हैं कि तुम में से कोई एक विश्वासघात करेगा और सभी लोग अचंभित होकर जीजस की ओर देख रहे हैं, का चित्रण किया गया है।

RAS 2023 MAINS (GS-I)

1. **ड्योढ़ीदार किन्हें कहा जाता था?**
Who were called Deorhidar?

उत्तर- मध्यकालीन राजस्थान में ड्योढ़ीदार उस व्यक्ति को कहा जाता था जो किले के मुख्य द्वार की निगरानी करता तथा उच्च पदस्थ व्यक्तियों के आवाजाही पर नियन्त्रण रखता था।
यह पद केवल सुरक्षा से संबंधित नहीं था परन्तु विश्वास, वफादारी व अनुशासन का प्रतीक था।

2. **मध्य-पूर्वी राजस्थानी अथवा ढूँढाड़ी के अन्तर्गत सम्मिलित किन्हीं दो बोलियों के नाम लिखिए।**
Write the names of any two dialects included under Central-Eastern Rajasthani or Dhundhari.

उत्तर- ढूँढाड़ी मध्य पूर्वी राजस्थान में बोली जाने वाली प्रमुख बोली है इसके अन्तर्गत कई उपबोलिया हैं **तोरावाटी–** (सीकर व झुंझुनूं) **राजावाटी-** जयपुर पूर्वी, **नागरचौल चौरासी-** जयपुर के दक्षिणी व टोक के पश्चिमी भाग में ढूढाडी का प्राचीनतम उल्लेख- आठ देश गुजरी पुस्तक में।

3. **बौद्ध और जैन मत संहिताओं में वर्णित धर्म से किस प्रकार भिन्न थे? दो मुख्य भिन्नताओं को रेखांकित कीजिए।**
How were Buddhist and Jain religions different from the religion described in the Samhitas? Highlight two main differences.

उत्तर-

अन्तर का आधार	बौद्ध	जैन
मुख्य ग्रंथ	त्रिपिटक (पाली भाषा में)	आगम ग्रंथ (प्राकृत भाषा में)
मोक्ष मार्ग	मध्यम मार्ग	कठोर तप

4. **तिन – कथिया क्या है?**
What is Tin-Kathiya?

उत्तर- तिन कथिया या तिन कठिया प्रणाली जिसमें तिन कठिया का अर्थ है "तीन कट्ठा" कट्ठा से तात्पर्य भूमि मापने की इकाई है। इस प्रणाली के अन्तर्गत यूरोपीय बागान मालिक ने किसानों को अपनी भूमि पर 3/20 हिस्से पर नील की खेती करने के लिए बाध्य किया था यह प्रणाली सर्वप्रथम बिहार के चम्पारण जिले में लागू की गई।

5. **सार्वभौमिक पौरोहित्य का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**
Explain the meaning of universal priesthood.

उत्तर- सार्वभौमिक पौरोहित्य (Universal Priesthood) का अर्थ है कि हर व्यक्ति को सीधे ईश्वर से संबंध स्थापित करने का अधिकार है, और इसके लिए किसी मध्यस्थ (जैसे पुरोहित, पादरी, या धार्मिक अधिकारी) की आवश्यकता नहीं है।
ईश्वर के सामने सभी समान हैं – जाति, लिंग या सामाजिक स्थिति का कोई भेद नहीं।प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक ग्रंथों को समझने का अधिकार है।धार्मिक अनुभव व्यक्तिगत और प्रत्यक्ष हो सकता है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

RAS 2024 MAINS (GS-I)

1. चरणदासी पंथ की दो महिला सन्त

उत्तर-

– चरणदासी पंथ की दो प्रसिद्ध महिला सन्त हैं: सहजो बाई तथा दया बाई। ये दोनों सन्त चरणदास जी (1703–1782) की शिष्या थीं, जिन्होंने 18वीं शताब्दी में राजस्थान में इस पंथ की स्थापना की थी।

- सहजो बाई ने 'सहज प्रकाश' नामक ग्रन्थ तथा दया बाई ने 'दया बोध' और 'विनय मालिका' नामक ग्रन्थों की रचना की।

2. मारवाड़ राज्य में 'हाथ का कुरब' से क्या आशय है?

उत्तर-

– 'हाथ का कुरब' मारवाड़ के दरबार में सामन्तों को महाराजा द्वारा दिया जाने वाला एक उच्च श्रेणी का औपचारिक सम्मान था। राजा द्वारा सामंत के कंधे को हाथ से स्पर्श करके अपने सीने तक ले जाने वाली सम्मान-रीति को ही 'हाथ का कुरब' कहा जाता था, जो केवल अत्यंत विशिष्ट, निष्ठावान सामंतों को ही दिया जाता था।

3. भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना का प्रारूप किसने बनाया एवं यह किस विकास मॉडल पर आधारित थी?

उत्तर-

– भारत की प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951-1956) का प्रारूप मुख्य रूप से के.एन. राज ने बनाया था। यह योजना हैरड-डोमर विकास मॉडल पर आधारित थी, जो आर्थिक वृद्धि को निवेश पर निर्भर मानता है।

- प्रथम पंचवर्षीय योजना का मुख्य लक्ष्य खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि करके देश को आत्मनिर्भर बनाना था।

4. अहमदिया आन्दोलन

उत्तर-

– अहमदिया आंदोलन एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक सुधार आंदोलन था, जिसकी स्थापना 1889 में मिर्जा गुलाम अहमद ने ब्रिटिश भारत के गुरदासपुर जिले के कादियान कस्बे में की थी।

– इसका उद्देश्य मुसलमानों के बीच इस्लाम के सच्चे स्वरूप को पुन: स्थापित करना था। यह आंदोलन तर्क और विज्ञान के साथ धार्मिक सिद्धांतों को जोड़ता है।

5. थर्मीडोरियन प्रतिक्रिया

उत्तर-

– थर्मीडोरियन प्रतिक्रिया फ्रांसीसी क्रांति के दौरान 27 जुलाई, 1794 में हुई एक घटना थी, जिसने आतंक के शासन के अंत को चिह्नित किया और क्रांतिकारी सरकार के कट्टरपंथी चरण को समाप्त कर दिया।

– थर्मीडोरियन प्रतिक्रिया के मुख्य प्रभाव - आतंक का अंत, जैकोबिन क्लब का पतन, कीमतों में भारी वृद्धि और आर्थिक अस्थिरता, 1795 में एक नया संविधान अपनाया गया, इस प्रतिक्रिया ने सत्ता को मध्यम वर्ग के हाथों में केंद्रित कर दिया।

❑❑❑

Part – B
5 MARKS

RAS 2016 MAINS (GS-I)

1. Discuss the salient features of the Fort architecture in Rajasthan.

राजस्थान के दुर्ग स्थापत्य की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

- राजस्थान में दुर्ग निर्माण की परम्परा पूर्व मध्यकाल से ही देखने को मिलती है। यहाँ के लगभग प्रत्येक जनपद में दुर्ग या गढ़ विद्यमान है। अद्भुत एवं विलक्षण प्रतिभा को समाहित किए ये सभी दुर्ग राजस्थानी स्थापत्य कला की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। सुदृढ़ प्राचीर, विशाल परकोटा, अभेद्य बुर्ज, किले के चारों ओर गहरी खाई अथवा पारिख, किले के भीतर सिलहखाना (शस्त्रागार), जलाशय अथवा पानी के टाँके, अन्न भण्डार, गुप्त प्रवेश द्वारा, सुरंग, राजप्रासाद, सैनिक आवास गृह यहाँ के सभी किलों की मूलभूत विशेषता है। राजस्थान में धान्वन दुर्ग, जल दुर्ग, वन दुर्ग, पारिख दुर्ग, गिरि प्रकार के दुर्गों का निर्माण हुआ है। अपनी उत्कृष्टता के कारण राजस्थान के छह दुर्ग यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है।

2. There was a rich tradition of 'Nirguna Bhakti' in medieval India. Explain.

मध्यकालीन भारत में 'निर्गुण भक्ति' की समृद्ध परम्परा थी। स्पष्ट कीजिए।

- भक्ति आंदोलन काल में 'निर्गुण भक्ति' एक प्रमुख शाखा थी। निर्गुण भक्ति में ईश्वर को निराकार माना गया है। अवतारवाद, मूर्ति पूजा तथा कर्मकाण्डों का विरोध करके इस धारा ने जन-जन को निराकार ब्रह्म की उपासना का सीधा सरल मार्ग दिखाया तथा समाज में व्याप्त भेदभाव, अस्पृश्यता आदि को समाप्त किया। मनुष्य मात्र के कल्याण की भावना मन में रखकर इन्होंने भजन, कीर्तन, मनन, नाम-स्मरण एवं गुरु-सान्निध्य को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताया। रामस्नेही सम्प्रदाय, कबीरपंथ, विश्नोई सम्प्रदाय, दादू पंथ, सिक्ख सम्प्रदाय, आदि निर्गुण संप्रदाय तथा संत रैदास, संत राजाराम, संतदास जी, स्वामी लाल गिरी आदि प्रमुख निर्गुण सम्प्रदाय के संत थे।

3. Highlight the similarities and differences between the bundi and Kishangarh schools of Rajasthani paintings.

राजस्थानी चित्रकला की बूँदी और किशनगढ़ शैलियों की समानता और भिन्नता को रेखांकित कीजिए।

- **समानता–** बूँदी व किशनगढ़ दोनों शैलियों में नारी सौंदर्य की प्रधानता, वृक्ष चित्रण (केले के वृक्ष का चित्रण), प्रकृति चित्रण तथा भावनाओं की सहजता जैसी समानताएँ दृष्टिगोचर होती है।
- **भिन्नता–** बूँदी शैली, ईरानी चित्रण शैली पर अधिक बल देती है, इसमें आखेट दृश्य एवं वन्य जीवों का चित्रण अधिक है। जबकि किशनगढ़ शैली काँगड़ा शैली व ब्रज साहित्य से प्रभावित है, इसमें नारी चित्रण पर अधिक बल एवं राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का चित्रण किया गया है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

4. Discuss the contribution of Shahjahan in the field of Mughal Architecture.
मुगल स्थापत्यकला में शाहजहाँ के योगदान की विवेचना कीजिए।

- अकबर के काल में प्रारम्भ हुई मुगल स्थापत्य कला शाहजहाँ के काल में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची। यह काल मुगल स्थापत्य का स्वर्ण काल कहलाता है। शाहजहाँ का काल संगमरमर के भवनों का काल है। इस काल में 'पित्रा-ड्यूरा' नामक नई कला का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमें संगमरमर पर विभिन्न आकृतियों में रंगीन पत्थरों, धातुओं, मनकों आदि के साथ जड़ाई करके सजावट का कार्य किया जाता था। इसी काल में कई स्तरीय मेहराबों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। दिल्ली में स्थित जामा मस्जिद तथा लाल किला, आगरा के किले में दीवाने–खास, रंग–महल, शीश–महल, नगीना मस्जिद, मोती मस्जिद, एतमादुद्दौला का मकबरा (प्रथम पित्रा-ड्यूरा का प्रयोग) तथा विश्व प्रसिद्ध ताजमहल इस काल के प्रमुख भवन है। शाहजहाँ की मृत्यु के बाद मुगल स्थापत्य कला का स्वर्ण युग समाप्त हो गया।

5. In what way the revolt of 1857 was a turning point in Indian history?
किस प्रकार 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था?

- 1857 के विद्रोह को इतिहासकारों द्वारा भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी गई है। यह राष्ट्र को औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराने का राष्ट्रवादी प्रयास था। यद्यपि यह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहा तथापि इसने जन सामान्य को स्वतंत्रता संग्राम में जुड़ने का अवसर प्रदान किया। सैनिक विद्रोह से प्रारम्भ क्रांति ने देश के वृहद् भाग को एवं किसानों, दस्तकारों सहित जनमानस को प्रेरित किया। इसी संग्राम के बाद देश में स्वतंत्रता हेतु सांगठनिक प्रयास प्रारम्भ हुए, इसके साथ ही कम्पनी का शासन समाप्त हुआ एवं भारत सीधे ब्रिटिश ताज के आधिपत्य में आ गया। अत: 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था।

RAS 2016 SPECIAL MAINS (GS-I)

1. Write a short note on the historical plays of Sanskrit literature.
संस्कृत साहित्य के ऐतिहासिक नाटकों पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

- संस्कृत साहित्य के ऐतिहासिक नाटकों में वस्तु, नेता एवं रस तीनों को प्रमुख स्थान दिया गया है। इन्हीं तत्त्वों के आधार पर रूपकों का विभाजन किया गया है – रूपक के दस भेद हैं, जिसमें प्रथम भेद 'नाटक' है। अधिकांश नाटकों की कथावस्तु ऐतिहासिक एवं पौराणिक है। संस्कृत के प्रमुख नाटक –

(1) स्वप्नवासवदत्तम्	(2) मृच्छकटिकम्
(3) मालविकाग्निमित्रम्	(4) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(5) मुद्राराक्षस	(6) यज्ञफल
(7) प्रतिमानाटक	(8) उरुभंग
(9) उत्तररामचरितम्	

2. Explain the fundamental difference between the Gandhara and Mathura Schools of Art.
गांधार एवं मथुरा कला शैलियों के आधारभूत अंतर को स्पष्ट कीजिए।

- गांधार व मथुरा मूर्तिकला की शैलियाँ मौर्योत्तर काल में विकसित हुई।

अन्तर का आधार	गांधार शैली	मथुरा शैली
प्रारंभ करने का श्रेय एवं संरक्षण	हिंदू-यूनानी शासकों एवं कुषाण शासक।	कुषाण शासकों द्वारा।
विस्तार	उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत केन्द्र- कांधार	मथुरा, सौंख, सारनाथ, कंकाली टीला और आस-पास के क्षेत्र में।
प्रभाव	यूनानी मूर्तिकला का व्यापक प्रभाव।	भारतीय शैली का स्वदेशी प्रभाव अधिक।
धार्मिक संबद्धता	ग्रीक व रोमन देवताओं से प्रभावित मुख्यत: बौद्ध चित्रकला।	हिंदू, जैन व बौद्ध धर्मों का प्रभाव।
प्रयुक्त सामग्री	चितकबरें व स्लेटी पत्थर का प्रयोग।	लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग।
बुद्ध मूर्ति की विशेषता	सौंदर्य प्रधान।	आध्यात्मिकता से युक्त।

3. Evaluate the contribution of Sawai Jai Singh in the field of art and literature.
कला एवं साहित्य के क्षेत्र में सवाई जयसिंह के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

- **कला के क्षेत्र में–**
  स्थापत्य कला के क्षेत्र में जयपुर नगर की स्थापना, नाहरगढ़ दुर्ग, सिसोदिया रानी का महल, गोविन्द देव जी का मंदिर, जलमहल, हरमाड़ा नहर तथा देश में 5 स्थानों पर वैधशालाओं का निर्माण सवाई जयसिंह की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ रही।
- **चित्रकला के क्षेत्र में** सूरतखाना नाम से चित्रकला विभाग की स्थापना की।
- **साहित्य के क्षेत्र में–** सवाई जयसिंह द्वारा 'जयसिंह कारिका' नामक ज्योतिष ग्रंथ तथा जीज–ए–मोहम्मदशाही नामक नक्षत्र सारणी तैयार करवाई गई।
- वह पुण्डरिक रत्नाकर, जनार्दन भट्ट, चक्रपाणि, पं. जगन्नाथ, श्री कृष्ण भट्ट जैसे अनेक साहित्यकारों का आश्रयदाता था।
- साहित्यकारों के निवास हेतु सवाई जयसिंह ने ब्रह्मपुरी का निर्माण करवाया।

4. How the problem of Hyderabad's accession in Indian Union was solved?
भारतीय संघ में हैदराबाद के विलय की समस्या का समाधान कैसे हुआ?

- जब सरदार पटेल ने हैदराबाद निजाम से सीधे भारत में विलय का आग्रह किया तो निजाम ने इसे ठुकरा दिया। इसलिए भारतीय सेना ने 13 सितंबर, 1948 को हैदराबाद के भारत में विलय के लिए ऑपरेशन पोलो शुरू किया। इस ऑपरेशन से हैदराबाद के आखिरी निजाम को सत्ता से हटाया गया तथा हैदराबाद को भारत का हिस्सा बना लिया गया। हैदराबाद के शासक ने अपनी रक्षा के लिए रजाकारों की सेना बना रखी थी, जिसे भारतीय सैनिकों ने सिर्फ **5** दिन में हरा दिया।

5. With what objectives did Mahatma Gandhi launch the Non-Cooperation Movement?
किन उद्देश्यों को लेकर महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया?

- **उद्देश्य–**
  (1) शांतिपूर्ण एवं अहिंसात्मक उपायों से स्वराज प्राप्त करना।
  (2) ब्रिटिश भारत की जो संस्थाएँ हैं, उनका बहिष्कार करना तथा सरकारी मशीनरी को ठप्प करना।
  (3) स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार करना।
  (4) हिंदू–मुस्लिम एकता पर बल देना।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

(5) भारतीय जनता का सहयोग प्राप्त कर अंग्रेजों को भारत छोड़ने हेतु विवश करना।

RAS 2018 MAINS (GS-I)

1. Write a short note on bronze images found from Harappan sites.
हड़प्पा स्थलों से प्राप्त काँस्य मूर्तियों पर एक लघु लेख लिखिए।

- हड़प्पा सभ्यता के नागरिक काँसे की ढलाई का कार्य कुशलता से बड़े पैमाने पर करते थे। यहाँ काँसे को ढालकर मनुष्यों व पशुओं दोनों की ही मूर्तियाँ बनाई गई हैं। मानव मूर्तियों में एक नर्तकी की मूर्ति, जो मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई इनकी सर्वोत्तम कलाकृति है। कालीबंगा से एक साँड की काँस्य मूर्ति प्राप्त हुई है, इसके अलावा हड़प्पा स्थलों से प्राप्त भैंस और बकरी की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

2. Bharatendu Harishchandra was the precursor of Modern trends in Hindi literature. Discuss.
भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी साहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियों के अग्रदूत थे । विवेचना कीजिए ।

- हिन्दी साहित्य में नवजागरण के अग्रदूत रूप में विख्यात भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने न केवल नई विधाओं का सृजन किया अपितु साहित्य की विषय वस्तु में भी नयापन लाए। इनसे पूर्व का हिन्दी साहित्य प्रेम, भक्ति और अध्यात्म से जुड़ा था, इन्होंने अपने प्रयासों से हिन्दी साहित्य में देश की सामासिक संस्कृति की विशेषताओं के साथ पश्चिम की भौतिक व वैज्ञानिक सोच को भी समाहित किया। भारतेन्दु ने साहित्य में ईश्वर और आस्था की जगह मानव और तर्क को केन्द्र में रखकर साहित्य को बुद्धिवाद, मानवतावाद, व्यक्तिवाद, न्याय व सहिष्णुता के गुणों से सज्जित किया। 19वीं शताब्दी में भारत में विद्यमान भ्रष्टाचार, प्रांतवाद, अलगाववाद, जातिवाद और अस्पृश्यता जैसी समस्याओं को अपने नाटकों (भारत दुर्दशा), प्रहसनों (वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति।) और निबंधों का विषय बनाकर साहित्य को नवीन दिशा दी।
- सारांशतया प्राचीन प्रवृत्तियों का परिष्कार कर नवीनता का समावेश करने के कारण इन्हें हिन्दी साहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियों का अग्रदूत कहा गया।

3. Describe the method used by the Molela artists in preparing the terracotta objects.
मोलेला कलाकारों द्वारा टेराकोटा वस्तुओं के निर्माण में प्रयुक्त विधि का वर्णन कीजिए ।

- राजसमन्द के मोलेला गाँव के कलाकारों द्वारा पक्की मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने की कला टेराकोटा कहलाती है। इसके निर्माण में प्रयुक्त विधि के निम्नलिखित चरण हैं-
  i. घर की महिलाओं द्वारा लाल मिट्टी (बनास नदी) में से अशुद्धियाँ निकालकर इसे गूंथा जाता है।
  ii. घर के आंगन को गधे की लीद से साफ करके आंगन में पट्टिका तैयार की जाती है।
  iii. इन आयताकार टेराकोटा पट्टिका पर देवी-देवताओं या किसी दृश्य को उभारा जाता है। छवि बनने के बाद नैन-नक्श बनाए जाते हैं।
  iv. अंदर से खोखले रखे गए टेराकोटा को छैनी से तराशा जाता है।
  v. हवा निकलने के लिए छेद करके पट्टियों को 6-7 दिन तक सुखाया जाता है।
  vi. उत्पाद तैयार होने के बाद उसे भट्टी में 800 डिग्री सेल्सियस पर पकाया जाता है। पकने के बाद लाल घोल का लेप किया जाता है।

4. Discuss the causes of peasant unrest in the Jagirdari areas of Rajasthan.
राजस्थान के जागीरदारी क्षेत्रों में कृषक असंतोष के कारणों की विवेचना कीजिए।

- राजस्थान की राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक संरचना में तीन स्तर क्रमश: शासक, जमींदार व कृषक वर्ग सम्मिलित थे। 19वीं शताब्दी के अंत में तीनों वर्गों के सौहार्दपूर्ण संबंधों में कमी आई तथा कृषकों में असंतोष व्याप्त हुआ, जिसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-
  (i) ब्रिटिश सत्ता के प्रभाव में आकर शासकों ने अपनी प्रजा पर पर्याप्त ध्यान देना छोड़ दिया। इससे रियासतों में अव्यवस्था उत्पन्न हुई तथा अंग्रेजों का आतंक व्याप्त हुआ।
  (ii) अत्यधिक राजस्व के साथ ही कृषकों से ली जाने वाली बेगार व लाग में भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई।
  (iii) जागीरदारों द्वारा अंग्रेजी विलासी जीवन शैली को अपनाने के फलस्वरूप नए खर्चों का बोझ कृषि व्यवस्था पर पड़ा।
  (iv) अंग्रेजी प्रशासनिक व्यवस्थाओं के फलस्वरूप सामंतों का कृषकों के प्रति उदार नजरिया बदल गया।
  (v) औपनिवेशिक नीतियों के कारण अन्य व्यवसायों से विस्थापित लोग कृषि पर निर्भर हो गए, जिससे मजदूरों की संख्या में बढ़ोतरी हुई व जागीरदारों के रुख में कठोरता आई।

5. What were the suggestions given by the State Reorganisation Commission to strengthen the National Unity?
राष्ट्रीय एकता को सदृढ़ करने हेतु राज्य पुनर्गठन आयोग द्वारा दिए गए सुझाव क्या थे?

- वर्ष 1953 में 'फजल अली' की अध्यक्षता में बने 'राज्य पुनर्गठन आयोग' द्वारा वर्ष 1955 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में निम्नलिखित सुझाव दिए-
  I. राज्यों के पुनर्गठन में भाषा को मुख्य आधार माना जाए परन्तु आयोग ने एक राज्य एक भाषा के सिद्धांत को अस्वीकार किया।
  II. पुनर्गठन में भाषाई सांस्कृतिक एकरूपता के साथ वित्तीय, आर्थिक एवं प्रशासनिक पक्ष को भी ध्यान में रखा जाए।
  III. मूल संविधान के अंतर्गत चार आयामी राज्यों के वर्गीकरण को समाप्त करने की बात की गई।
  IV. सरकार ने 7 वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1956 द्वारा इन अनुशंसाओं को लागू किया।

RAS 2021 MAINS (GS-I)

1. Examine the salient features of Raj Singh style of temple architecture.
मन्दिर वास्तुकला में राजसिंह शैली की विशेषताओं का परीक्षण कीजिए।

- पल्लवकालीन मंदिर स्थापत्य कला का स्वर्ण काल राजसिंह शैली की मंदिर वास्तुकला को माना जाता है।

राजसिंह शैली का प्रारंभ पल्लव शासक नरसिंह वर्मन II (राजसिंह) ने किया था। शोर मंदिर तथा कांची का कैलाश मंदिर इस शैली के उदाहरण हैं।

➢ **राजसिंह शैली की विशेषताएँ–**
- गुहा मंदिरों के स्थान पर इमारती मंदिरों (पत्थर, ईंटों) का निर्माण।
- इसमें गर्भगृह मंडप और प्रवेशद्वार सभी एक-दूसरे से संबद्ध हैं।
- पिरामिडनुमा छोटा विमान।
- विमान के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- ग्रेनाइट तथा बलुआ पत्थरों का उपयोग।
- सिंह स्तंभ, मंडप के सुदृढ़ स्तंभ, शिखर, चारदिवारी उसमें भीतर की ओर बने छोटे-छोटे कक्ष, अलंकरण आदि।

2. Throw light on the activities of Kanwar Singh in Bihar during the Revolt of 1857.
1857 के विद्रोह के समय बिहार में कुंवरसिंह की गतिविधियों पर प्रकाश डालिए।

- 1857 की क्रांति में आरा, जगदीशपुर के जमींदार बाबू कुंवर सिंह के योगदान को याद किया जाता है।
- बिहार में क्रांति की शुरुआत 12 जून, 1857 को हुई थी। 80 वर्षीय बाबू कुंवर सिंह के नेतृत्व में दानापुर की फौज ने आरा के किले को घेर लिया तथा अंग्रेजी खजाने पर अधिकार कर लिया और अंग्रेज अधिकारी कैप्टन डेनवर को मार डाला और बाबू कुंवर सिंह ने आरा के किले पर अधिकार कर लिया।
- 3 अगस्त, 1857 को अंग्रेज अधिकारी आयर ने फिर से आरा पर आक्रमण किया और आरा किले पर पुन: अंग्रेजों का अधिकार हो गया। आरा और जगदीशपुर में अंग्रेजों से हारने के बाद बाबू कुंवर सिंह ने रीवा को जीता।

3. Write a short note on the integration of Sirohi in 'United Rajasthan'.
'एकीकृत राजस्थान' में सिरोही के विलय पर संक्षिप्त लेख लिखें।

- राजस्थान के एकीकरण में सिरोही का विलय दो चरणों में किया गया था। एकीकरण के छठे चरण में (26 जनवरी, 1950) आबू एवं देलवाड़ा क्षेत्र को छोड़कर शेष सिरोही को राजस्थान में मिला दिया गया था।
- एकीकरण के सातवें चरण (1 नवम्बर, 1956) में राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर आबू एवं देलवाड़ा का भी राजस्थान में विलय कर दिया गया। सिरोही के विलय पर वल्लभ भाई पटेल ने कहा था कि "राजस्थान वालों को गोकुल भाई भट्ट चाहिए था, वो हमने दे दिया है।"

4. Critically examine the Begun Peasant Movement of Rajasthan.
राजस्थान के बेगूं किसान आन्दोलन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

- बेगूं के किसानों ने सन् 1921 में लाग–बाग और बेगार के विरुद्ध आंदोलन की शुरुआत की। लेकिन प्रारंभिक प्रयासों में किसानों को कोई विशेष सफलता हाथ नहीं लगी बल्कि जागीरदार के दमनकारी व्यवहार से किसानों की फसलें नष्ट कर दी गई तथा स्त्रियों को अपमानित किया गया। किसानों के सम्मेलन पर गोलियाँ चलाने से रूपा जी और कृपा जी धाकड़ नामक दो किसानों की मृत्यु हो गई।
- उपर्युक्त असफलताओं के बावजूद अन्तत: सन् 1925 में किसानों की लगान दरें निर्धारित की गई। बेगार पर रोक लगा दी गई और 34 प्रकार की लागतें समाप्त कर दी गई। साथ ही इस किसान आन्दोलन ने प्रजामंडल आन्दोलनों के लिए जमीन तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा जातियों को एक होकर अत्याचारों का विरोध करने व अपने अधिकारों की माँग उठाने के लिए प्रेरित किया। किसानों में राजनीतिक चेतना का संचार हुआ एवं राष्ट्रीय आन्दोलनों के साथ जुड़ाव स्थापित हुआ।

5. Discuss the ideological background of American War of Independence.
अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक पृष्ठभूमि की विवेचना कीजिए।

- अमेरिकी क्रांति की वैचारिक पृष्ठभूमि के निम्नलिखित कारण माने जाते हैं-

➢ **उपनिवेशों पर इंग्लैण्ड का आर्थिक नियंत्रण होना–**
- उपनिवेशों के प्रति इंग्लैण्ड का दृष्टिकोण वाणिज्यवादी होना था।
- इंग्लैण्ड का मानना था कि उपनिवेश इंग्लैण्ड को आर्थिक लाभ पहुँचाने के लिए है। इससे उपनिवेशवासियों में तीव्र असंतोष उत्पन्न हुआ।

➢ **सप्तवर्षीय युद्ध का प्रभाव–**
- कनाडा पर इंग्लैण्ड का अधिकार हो जाने पर युद्ध व्यय अधिक होने से इंग्लैण्ड ने उपनिवशों पर कठोर कानून लागू किए।

➢ **दार्शनिकों तथा विचारकों का योगदान–**
- टॉम पेन की पुस्तक 'कॉमन सेन्स' ने उपनिवेशवासियों के मस्तिष्क को उद्वेलित किया। जेम्स ओटिस, सेमुअल एडम्स आदि विचारकों का प्रभाव भी पड़ा।

➢ **ग्रीनविले की कर नीतियाँ–**
- ग्रीनविले द्वारा शीरा एक्ट, स्टाम्प एक्ट, करेंसी एक्ट तथा क्वार्टरिंग एक्ट पारित करना, जिन्होंने इंग्लैण्ड के विरुद्ध संघर्ष करने हेतु उपनिवेशवासियों को एक कर दिया।
- राकिंघम की घोषणा, लार्ड नॉर्थ की चाय कर नीति तथा 'बोस्टन टी पार्टी' की घटना अमेरिकी क्रांति के तत्कालीन कारण बने।

RAS 2023 MAINS (GS-I)

1. राजस्थान साहित्य से सम्बन्धित निम्नलिखित पदों की व्याख्या कीजिए-
Explain the following terms related to Rajasthan literature-
(1) वात/ Vata
(2) वचनिका/ Vachanika

उत्तर- वात कहानी का पर्याय है यह कहने और सुनने की विशेष विधा है इसमें कहानी कहने वाला कहता जाता है और सुनने वाला 'हुँकारा' देता रहता है इस शैली में जीवन के सभी पक्षों (धर्म, युद्ध, दर्शन मनोरंजन) पर प्रकाश डाला जाता है वात तीनों रूप (गद्य, पद्य व गद्य-पद्य) मिलती है। उदारण- कान्हडदेव री वात, वीरमदेव सोनगरा री वात, पाबूजी री वात।

वचनिका

यह संस्कृत के वचन शब्द से बना है यह राजस्थानी साहित्य में प्रचलित गद्य-पद्य मिश्रित काव्य विद्या है इसमें अंत्यानुप्रास मिलते हैं परन्तु इसमें अपवाद भी मिलते है।

उदाहरण- अचलदास खींची री वचनिका – गाडण शिवदास, राठौड़ रूपसिंह री वचनिका।

2. भारत छोड़ो आन्दोलन के प्रति जयपुर प्रजामण्डल के दृष्टिकोण का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
Critically evaluate the attitude of Jaipur Prajamandal towards the Quit India Movement.

उत्तर- जयपुर प्रजामण्डल ने कुछ हद तक आन्दोलन में भाग लेने से परहेज किया हालाँकि मूल उद्देश्यों का समर्थन किया। आन्दोलन के कार्यकर्त्ता सीमित विरोध, याचिकाओं और जन जागरण के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज की जन समर्थन प्राप्त करने में असफल रहे, खुले विद्रोह स्थान पर संयमित व कूटनीतिक रूप अपनाया। जयपुर प्रजामण्डल का भारत छोड़ो आनदोलन के प्रति दृष्टिकोण समझौता व सक्रियता दोनों का मिश्रण था।

3. नयनार और अलवार भक्ति संतो समाजिक-धार्मिक महत्त्व की व्याख्या कीजिए –

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

Explain the socio-religious importance of Nayanar and Alvar bhakti saints -

उत्तर-

सामाजिक महत्त्व	धार्मिक महत्त्व
- जाति प्रथा का विरोध व सामाजिक समरसता पर बल दिया। उदाहरण- नंदर, कनन - सामाजिक जनजागरण पर बल दिया। - महिला संत परम्परा को सशक्त किया। उदाहरण- आंडाल - लोक संस्कृति व परम्परा को समृद्ध किया। उदाहरण- गीत, नृत्य व संगीत को बढ़ावा देना।	- भक्ति आधारित धर्म की स्थापना। - कर्मकांड की जगह भक्ति को मोक्ष का मार्ग बताया। - सम्पूर्ण समर्पण (प्रपत्ति) का भाग को प्रधानता दी। - धर्म की लोक भाषा प्रस्तुति तथा सामुदायिक एकता पर बल दिया। - मठों व मदिरों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

4. हैदराबाद के भारतीय संघ में विलय के मार्ग में रज़ाकार प्रमुख बाधा थे। स्पष्ट कीजिए।
Razakars were the main obstacle in the path of Hyderabad's merger with the Indian Union. Explain.

उत्तर-
1. हिंसा व आतंक- रज़ाकारों ने हिन्दू बहुल्य क्षेत्र में हिंसा से अस्थिरता व भय का वातावरण बना दिया था।
2. रज़ाकारों निजाम उस्मान अली पर हैदराबाद को भारत में विलय नहीं करने के लिए दबाव बनाया।
3. धार्मिक ध्रुवीकरण व अलगाववाद से राष्ट्रीय एकता प्रयासों समक्ष चुनौती खड़ी की।
4. भारत सरकार से बातचीत विफल करना।
5. रजाकारों की कट्टरता (प्रमुख बाधा)

5. दो विश्व युद्धों के कारण राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्र में यूरोपीय स्त्रियों की भागीदारी किस प्रकार से बढ़ी?
How did the participation of European women increase in the political and economic fields due to the two world wars?

उत्तर- दोनों विश्व के दौरान यूरोप नहीं अपितु पूरा विश्व प्रभावित हुआ। युद्धों के चलते समाज राजनीति व अर्थव्यवस्था में व्यापक बदलाव हुए जिससे यूरोपीय स्त्रियों की भागीदारी विशेष रूप से राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ी।

युद्ध के दौरान यूरोपीय स्त्रियों की भागीदारी	
आर्थिक क्षेत्र	**राजनीतिक क्षेत्र**
श्रम शक्ति के रूप में पुरुष सैनिक मोर्चे के रूप में चले गए जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में काम करने लिए स्त्रियों नियुक्त किया। स्त्रिया परम्परागत भुमिकाओं से बाहर आई तथा घरेलू कार्यों के साथ टैक्सी ड्राइवर, क्लर्क, मैकेनिक जैसे कार्य किए। आर्थिक आत्मनिर्भरता- नौकरी व वेतन के जरिए पहले से अधिक स्वावलम्बी बनी जिसमें उनका समाज में आत्म विश्वास मजबूत हुआ।	मताधिकार की माँग प्राप्ति- युद्ध में योगदान के कारण स्त्रियों ने राजनीतिक अधिकार (मतदान का अधिकार) की मांग की। युद्ध में चलते दबाव के कारण यूरोपीय देशों में महिलाओं मतदान का अधिकार दिया गया। ब्रिटेन- 1916 जर्मनी- 1919 फ्रांस- 1944 इटली- 1945 - राजनीतिक आन्दोलनों में सक्रियता। स्त्रियों ने सामाजिक सुधार श्रमिक अधिकार व
	शिक्षा से जुड़े आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी निभाई।

निष्कर्ष-
दोनों विश्वयुद्धों ने यूरोपीय समाज की महिलाओं घर की चार दीवारी क्षेत्र बाहर निकालकर राजनीति व आर्थिक क्षेत्र की मुख्यधारा में शामिल किया।

RAS 2024 MAINS (GS-I)

1. जंतर-मंतर, जयपुर के 'सम्राट यंत्र' पर टिप्पणी कीजिए ।

उत्तर-
- जयपुर के जंतर-मंतर का 'सम्राट यंत्र' दुनिया की सबसे बड़ी पत्थर की धूप घड़ी है। यह महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय की खगोलीय दृष्टि और उस समय के वैज्ञानिक नवाचार का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रमुख विशेषताएँ
- **आकार और संरचना**: 'वृहद सम्राट यंत्र' एक विशाल त्रिकोणीय संरचना है, जिसकी परछाई जमीन पर बने दो चतुर्थांशों (quadrants) पर पड़ती है, जिससे समय का पता चलता है। यह यंत्र 90 फीट (27 मीटर) से अधिक ऊँचा है।
- समय माप: इसके विशाल आकार के कारण यह लगभग 2 सेकंड की सटीकता से समय मापने में सक्षम है, जो प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान का एक अद्भुत उदाहरण है।
  - इसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय समय को सटीक रूप से मापना और आकाशीय भूमध्यरेखीय प्रणाली में खगोलीय पिंडों के निर्देशांकों को मापना था।
  - यह यंत्र एक साधारण धूपघड़ी के सिद्धांत पर काम करता है, लेकिन इसका विशाल आकार और सटीक निर्माण इसे अद्वितीय बनाता है।
  - इस यंत्र की नोक (स्मारक का हाइपोटेनस) 27 डिग्री के कोण पर झुकी हुई है, जो सीधे जयपुर शहर के भौगोलिक अक्षांश के अनुरूप है, जिससे माप की सटीकता सुनिश्चित होती है।

2. राजस्थान के किसान आन्दोलन में चंडावल घटना, 1942-

उत्तर-
- **तिथि:** 28 मार्च, 1942।
- **आयोजक:** राजस्थान लोक परिषद, सदस्य मांगीलाल ने बैठक बुलाई थी।
- चंडावल घटना जोधपुर रियासत (मारवाड़) के चंडावल गाँव में घटित हुई।
- यह घटना जागीरदारी शोषण, भारी लगान और जबरन वसूली के विरुद्ध किसानों के प्रतिरोध का परिणाम थी।
- मारवाड़ किसान सभा के नेतृत्व में किसान संगठित हो रहे थे और अन्यायपूर्ण लगान न देने का निर्णय लिया गया।
- प्रतिरोध बढ़ने पर जागीर प्रशासन ने बलपूर्वक कार्रवाई की और किसानों पर गोलीबारी हुई।
- गोलीकांड में किसान हताहत हुए, जिससे प्रदेशभर में आक्रोश फैल गया।
- यह प्रकरण राजस्थान के किसान आंदोलनों में महत्त्वपूर्ण मोड़ बना और दमनकारी जागीरदारी व्यवस्था के विरुद्ध व्यापक जनचेतना फैली।

3. 'पाँचरात्र' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-
- 'पाँचरात्र' वैष्णव सम्प्रदाय से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक और दार्शनिक अवधारणा है, जो मुख्य रूप से भगवान विष्णु या उनके

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

अवतार नारायण की पूजा से जुड़ा हुआ है। इस अवधारणा के प्रमुख स्तंभ निम्नलिखित हैं:

1. सिद्धान्त (तत्वज्ञान) -

– यह पाँचरात्र सिद्धांत का दार्शनिक आधार है।

– **ब्रह्म की अवधारणा:** पाँचरात्र में परम सत्य (ब्रह्म) को वासुदेव (जो भगवान विष्णु का एक रूप हैं) माना जाता है। वासुदेव ही संपूर्ण सृष्टि का मूल कारण हैं।

– **व्यूह सिद्धांत :** यह सिद्धांत बताता है कि वासुदेव (परम ब्रह्म) अपनी सृष्टि को बनाए रखने और भक्तों पर कृपा करने के लिए चार क्रमबद्ध रूपों (व्यूहों) में स्वयं को प्रकट करते हैं: वासुदेव (परम/पूर्ण), संकर्षण (जीव का स्रोत), प्रद्युम्न (मन और अहंकार का स्रोत) तथा अनिरुद्ध (तत्व और भौतिक संसार का स्रोत)।

2. उपासना (पूजा विधि) –

– यह पाँचरात्र का व्यावहारिक और कर्मकांडीय पहलू है।

– पाँचरात्र साहित्य मूर्ति पूजा और मंदिरों के निर्माण की विस्तृत विधियाँ प्रदान करता है। वैष्णव मंदिरों में की जाने वाली विस्तृत पूजा-अर्चना (अर्चा-पूजा) इसी परंपरा पर आधारित है। पाँचरात्र साहित्य को वैष्णव आगम या मूल आगम (पाँचरात्र संहिता) माना जाता है।

3. मुक्ति का मार्ग –

पाँचरात्र मोक्ष प्राप्त करने के लिए तीन मार्ग सुझाता है:

ज्ञान : परम सत्य (वासुदेव) का ज्ञान प्राप्त करना।

कर्म : वेदों में निर्धारित धार्मिक कर्तव्यों का पालन करना।

भक्ति : भगवान विष्णु/नारायण के प्रति प्रेम, समर्पण और उपासना करना।

ऐतिहासिक महत्व -

– पाँचरात्र साहित्य की शिक्षाओं का गहरा प्रभाव श्री वैष्णव सम्प्रदाय (विशेषकर रामानुजाचार्य द्वारा प्रचारित) पर पड़ा है और यह दक्षिण भारत के कई प्रमुख विष्णु मंदिरों के दैनिक अनुष्ठानों का आधार है।

4. मुगलकालीन वास्तुकला पर देशज प्रभाव का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-

– मुगलकालीन वास्तुकला ईरानी-इस्लामी शैलियों और देशज भारतीय स्थापत्य परंपराओं का स्पष्ट मिश्रण है। यह प्रभाव स्थानीय कारीगरों, सांस्कृतिक तत्वों और राजपूत-मुगल संधियों के माध्यम से आया।

– मुख्य देशज तत्वों में छतरियाँ (Chatris), झरोखे (Balconies), नक्काशीदार कोष्ठक, कंगूरे और कमल प्रतीक शामिल हैं। फतेहपुर सीकरी इस मिश्रण का उत्तम उदाहरण है। यहाँ तक कि ताजमहल में भी जाली कार्य और कलश भारतीय परंपरा का योगदान हैं, जिसने मुगल स्थापत्य को एक विशिष्ट गुणात्मक पहचान दी।

5. औद्योगिक क्रान्ति में वस्त्र उद्योग में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने वाले आविष्कारों के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर-

औद्योगिक क्रांति में वस्त्र उद्योग का क्रमिक विकास निम्नलिखित आविष्कारों पर आधारित था:

– सबसे पहले, फ्लाइंग शटल (जॉन के, 1733) ने बुनाई की गति बढ़ाई। सूत की मांग पूरी करने के लिए स्पिनिंग जेनी (जेम्स हरग्रीव्ज, 1764), वॉटर फ्रेम (रिचर्ड आर्कराइट, 1769), और स्पिनिंग म्यूल (सैमुअल क्रॉम्पटन, 1779) जैसे आविष्कारों ने सूत कताई को अत्यंत कुशल और मात्रात्मक बनाया। अंतिम चरण में, पावर लूम (एडमंड कार्टराइट, 1785) ने बुनाई को मशीनीकृत किया। इन मशीनों को भाप इंजन (जेम्स वॉट, 1789) द्वारा शक्ति मिलने से फैक्ट्रियों में उत्पादन अभूतपूर्व रूप से बढ़ा।

❑❑❑

Part – C
10 MARKS

RAS 2016 MAINS (GS-I)

1. In what way the advent of Mahatma Gandhi transformed the Indian Nationalist Movement into a mass movement?
महात्मा गाँधी के आगमन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को किस प्रकार एक जन आंदोलन बना दिया?

- दक्षिण अफ्रीका के सफल प्रयोगों का अनुभव लेकर जनवरी, 1915 ई. में भारत लौटे महात्मा गाँधी ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक नवीन ऊर्जा प्रदान की। गाँधी जी ने तत्कालीन सभी राजनीतिक विचारधाराओं से असहमति व्यक्त की तथा आम जन मानस को 'सत्य', 'अहिंसा' व 'सत्याग्रह' जैसे शब्दों से परिचित करवाया।
- गाँधी जी ने सर्वप्रथम चम्पारण सत्याग्रह (प्रथम सविनय अवज्ञा), अहमदाबाद मिल हड़ताल (प्रथम भूख हड़ताल) तथा खेड़ा (प्रथम असहयोग) के माध्यमों से अपने प्रयोगों को स्थापित किया तथा जन सामान्य के बीच जाकर उनकी समस्याएँ जानने का प्रयास किया। वर्ष 1919 ई. से 1922 ई. के मध्य खिलाफत व असहयोग दो सशक्त जन आंदोलन प्रारम्भ किए। खिलाफत आंदोलन ने हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल दिया वहीं असहयोग की तकनीक ने कृषक, मजदूर, महिलाओं तथा शहरी शिक्षित वर्ग को भी आकर्षित किया। इस आंदोलन में विदेशी कपड़ों का बहिष्कार सर्वाधिक सफल रहा अत: यह एक जन आंदोलन बना।
- वर्ष 1930 ई. में सर्वसाधारण के मुद्दे 'नमक पर कर' के विरुद्ध 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' प्रारम्भ किया। इसे पूरे देश में अलग-अलग रूपों में समर्थन प्राप्त हुआ।
- इसके अतिरिक्त गाँधी जी ने अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा जनता को आंदोलन हेतु तैयार करने तथा समाज में व्याप्त बुराइयों को कम करने का भी प्रयास किया।
- गाँधी जी के इन्हीं प्रयासों के कारण वर्ष 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में छात्रों, मजदूरों, किसानों व सर्वसाधारण ने स्वत: स्फूर्ति से भाग लिया।

2. Underline the basic freatures of the Prajamandal Movement in Rajasthan.
राजस्थान के प्रजामण्डल आन्दोलन की मूलभूत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

➢ **प्रजामण्डल आंदोलन की मूलभूत विशेषताएँ –**

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने हरिपुरा अधिवेशन में रियासतों की जनता को अपने राजनीतिक अधिकारों के लिए आंदोलन करने की छूट दे दी। राजस्थान में ये राजनीतिक संगठन प्रजामण्डल के नाम से स्थापित हुए।

➢ **इनकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं –**

- उत्तरदायी शासन की स्थापना करना।
- अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध बगावत।
- राजनीतिक एकता स्थापित करना।
- सामाजिक सुधार एवं रचनात्मक कार्य करना।
- शिक्षा का प्रचार-प्रसार।
- सामाजिक कुप्रथाओं को समाप्त करना।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- आदिवासी लोगों तथा दलितों का उत्थान।
- बेगार प्रथा उन्मूलन कार्य।
- महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना।
- राष्ट्रीय आंदोलन को प्रोत्साहन मिला।
- सामाजिक सौहार्द्र एवं एकता स्थापित करना।

3. What was the distinctive contribution of Swami Vivekananda to Inida's awakening?
भारतीय जागरण में स्वामी विवेकानन्द का विशिष्ट योगदान क्या था?

- 19वीं शताब्दी धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलनों में नव-हिन्दूवाद के उपदेशक के रूप में स्वामी विवेकानंद का नाम प्रमुख है। स्वामी विवेकानन्द ने 1897 ई. में 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की तथा इनके द्वारा मानवतावादी राहत कार्यों एवं सामाजिक कार्यों को अपना प्रमुख उद्देश्य बनाया गया।
- विवेकानन्द ने सर्वधर्म समभाव के विचार को अपनाया तथा धार्मिक संकीर्णता के सिद्धांतों की आलोचना की। उन्होंने सब देशों के दुखी, पीड़ित व दरिद्रजन को अपना ईश्वर माना तथा देशवासियों से स्वतंत्रता, समानता एवं स्वतंत्र सोच धारण करने की अपील की। विवेकानन्द ने मानवमात्र की सेवा की तुलना शिव की पूजा से की।
- विवेकानन्द ने कर्मफल की सर्वोच्चता को प्रतिपादित करते हुए कहा कि कर्म के द्वारा ही मानव का दैवीय अस्तित्व होता है। 1893 ई. में शिकागो के 'विश्व धर्म सम्मेलन' में वेदान्त को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए पश्चिम के भौतिक-वाद तथा पूर्व के अध्यात्मवाद के सम्मिश्रण को समाज की भलाई का मार्ग बताया।
- निष्कर्षतया स्वामी विवेकानन्द ने प्राचीन भारतीय सभ्यता व सनातन संस्कृति को प्रकाश में लाकर पुनर्जागरण का कार्य किया तथा जातिवाद, छुआछूत जैसी विषमताओं को दूर कर समाज को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया।

4. In what way the 'Enlightenment Age' transformed the course of European history?
'प्रबोधन युग' ने यूरोप के इतिहास की धारा को किस प्रकार प्रभावित किया?

- 17-18 वीं शताब्दी के काल को यूरोप में प्रबोधन युग के नाम से जाना जाता है। प्रबोधन युग को ज्ञानोदय युग या विवेक का युग कहा जाता है।
- इस अवधि में पश्चिमी यूरोप के सांस्कृतिक एवं बौद्धिक वर्ग ने परम्परा से हटकर तर्क, विश्लेषण तथा वैयक्तिक स्वतंत्रता पर जोर दिया।
- विचारों और दृष्टिकोण में विज्ञान एवं तर्क को बढ़ावा देने के कारण इसे बौद्धिक क्रांति भी कहा गया है।
- प्रत्येक विषय की वास्तविकता को समझने के लिए तर्क, विज्ञान और बुद्धि से परखा जाने लगा।
- प्रबोधनकालीन चिंतकों ने प्रत्येक घटना के पीछे किसी स्थायी तथा अपरिवर्तनशील प्राकृतिक नियम का सहयोग माना।
- धर्म से ऊपर उठकर मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास।
- ज्ञान तथा प्राकृतिक विज्ञान में संबंध की उत्पत्ति।
- प्रबोधन युग का साहित्य विश्लेषणात्मक तथा आशावादी था। इस युग के साहित्य ने तत्कालीन समाज को जागृत करने तथा विचारों को प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- रूसो, मॉन्टेस्क्यू, एडम स्मिथ, कांट, जॉन लॉक, वॉल्टेयर आदि प्रमुख प्रबोधन कालीन विचारक हुए।
- प्रबोधन युग में यूरोप में वैचारिक स्तर पर नए दृष्टिकोण का विकास हुआ, जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, धर्म निरपेक्षता तथा तर्क को बढ़ावा दिया गया।

➢ **प्रबोधन काल का प्रभाव–**

- व्यापार एवं तकनीक के क्षेत्र में प्रगति से औद्योगीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- राजतंत्र की समाप्ति के साथ गणतंत्र की शुरुआत हुई।
- साहित्य का विकास हुआ।
- नवीन विचारों तथा दृष्टिकोणों का प्रसार हुआ।
- शिक्षा का प्रसार तथा निम्न वर्ग का उत्थान हुआ।
- राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन हुए।
- स्वतंत्रता समानता तथा बंधुत्व की भावना का विकास हुआ।

RAS 2016 SPECIAL MAINS (GS-I)

1. Elaborate the causes of Political Awakening in Rajasthan during the early 20th century.
प्रारंभिक 20वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में राजनीतिक जागरण के कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

- प्रारंभिक 20 वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में राजनीतिक जागरण के कारण –

(i) **1857 की क्रांति–** जब संपूर्ण भारत में क्रांति हो रही थी तब राजस्थान भी अपने राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ तथा राजस्थान में राजाओं के विरुद्ध व उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए प्रजामण्डल आंदोलन चलाए गए।

(ii) **अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना–** कांग्रेस की स्थापना के कारण राजस्थान के कई नेता इस संघ से जुड़े जिसने राजस्थान में राजनीतिक जागरण का कार्य किया।

(iii) **किसान आंदोलन–** किसान आंदोलनों ने प्रचलित सामंती व्यवस्था की बुराइयों को उजागर कर उसे बदलने की आवश्यकता पर बल दिया।

(iv) **आर्य समाज का योगदान–** आर्य समाज के प्रवर्तक दयानंद सरस्वती ने राजस्थान की यात्रा की तथा शिक्षा का प्रचार किया। जिससे न केवल सामाजिक, धार्मिक सुधार हुआ अपितु लोग राजनीतिक सुधारों के प्रति भी जागरूक हुए।

(v) **अंग्रेजी शिक्षा का योगदान–** पहले लोग परंपरागत शिक्षा प्राप्त करते थे। 20वीं शताब्दी के आरंभ में कई शासकों ने अपने-अपने राज्य में अंग्रेजी शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की और इन शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त लोग राजकीय सेवा में नियुक्ति प्राप्त करना चाहते थे। परंतु उनके साथ भेदभाव होता था। इससे राजनीतिक असंतोष बढ़ा, जिससे उनमें नई चेतना जागृत हुई।

(vi) **समाचार पत्रों व साहित्य का योगदान–** राजनीतिक चेतना विकसित की।

(vii) **प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव–** कर बढ़ाया।

(viii) प्रवासी व्यापारी वर्ग का योगदान।

(ix) विभिन्न संगठनों का योगदान।

(x) क्रांतिकारियों का योगदान।

2. Write a detailed note on the Mughal Painting.
मुगल चित्रकला पर विस्तृत लेख लिखिए।

- इस्लाम में व्यावहारिक स्तर पर चित्रकला को प्रतिबंधित विषय के रूप में वर्णित किया गया है मगर मुगलकालीन शासकों के उदारवादी होने के कारण हिंदू व मुस्लिम शैलियों के समन्वय एवं समायोजन से

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

न केवल मुगलकालीन चित्रकला शैली का उद्भव एवं विकास हुआ बल्कि यह राष्ट्रीय चित्रकला शैली के रूप में भी विकसित हुई।

- अकबर को मुगल चित्रकला का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है तथा जहाँगीर का काल मुगल चित्रकला का स्वर्ण युग माना जाता है।
- मुगलकालीन चित्रकला शैलियों को 4 भागों में बाँटा जा सकता है–
  (i) पाण्डुलिपि चित्रकला शैली– साहित्यों का चित्रों के रूप में अंकन। (अकबर के समय में)
  (ii) भित्ति चित्रकला शैली– राजा के लिए दीवारों पर राजकीय विषयों से संबंधित चित्र बनाए जाते थे। (अकबर के समय में)
  (iii) छवि/व्यक्ति चित्रकला शैली– इसके अंतर्गत व्यक्ति विशेष सामान्यत: बादशाहों, राजपरिवार के सदस्यों के चित्र बनाए जाते थे। (जहाँगीर के समय में)
  (iv) रेखा चित्रकला शैली– रेखीय आकृतियों के माध्यम से बनाए गए चित्रों की शैली। (शाहजहाँ के समय में)

➢ **मुगलकालीन चित्रकला शैलियों की विशेषताएँ–**

(i) प्रारंभिक दौर में–
- ईरानी व यूरोपियन शैलियों से प्रभावित।
- द्विविमीय चित्रकला शैली।
- ज्यामितीय आकृतियों के रूप में अधिक चित्र बने।

(ii) मध्य मुगलकालीन चित्रकला–
- चित्रकला शैली पर पाश्चात्य प्रभाव कम हुआ तथा भारतीय हिंदू शैली का प्रभाव बढ़ा।
- त्रिविमीय शैली में चित्र बने।
- आकृति संतुलन पर अधिक ध्यान दिया गया।
- रंगों का उचित समायोजन देखने को मिलता है।
- छायां और प्रकाश का उचित समायोजन।
- छवि चित्रों का निर्माण अधिक हुआ है।
- शाहजहाँ का समय चित्रकला शैली में प्रयोगधर्मिता का काल कहलाता है।

(iii) उत्तर मुगलकालीन चित्रकला–
- औरंगजेब के समय चित्रकला स्कूल बंद हो गए।
- क्षेत्रीय चित्रकला का उदय हुआ।

➢ **प्रमुख चित्रकार–**
- मंसूर मीर सैय्यद अली, अब्दुस्समद, बसावन, दसवंत, मिस्किन, जगन्नाथ, महेश, अका रिजा, अबुल हसन, उबैद और चिंतामणि।

3. Why was Bengal partitioned in 1905? Also highlight its consequences.
1905 में बंगाल का विभाजन क्यों किया गया? इसके परिणामों को भी रेखांकित कीजिए।

➢ **बंगाल विभाजन के कारण–**
(i) अंग्रेजों की नीति – बंगाल में मुसलमान अधिक थे अत: अंग्रेजों ने मुसलमानों को खुश करने के लिए और हिन्दू-मुस्लिमों में फूट डालने के लिए बंगाल विभाजन किया।
(ii) प्रशासन की सुविधा– बंगाल प्रांत का क्षेत्र विशाल था। बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा छोटा नागपुर इसमें सम्मिलित थे, जिससे प्रशासनिक कार्यों में समस्या होती थी।
(iii) उग्र राष्ट्रीयता का दमन – बंगाल निवासियों में उग्र राष्ट्रीयता का जन्म हो गया था, जिसका ब्रिटिश सरकार दमन करना चाहती थी।

➢ **बंगाल विभाजन के परिणाम** –
(i) भारत में हिंदू-मुस्लिम दंगे शुरू हुए।
(ii) देश में अराजकता फैली।
(iii) स्वदेशी आंदोलन को बल मिला। विदेशी वस्त्रों को जलाना, विदेशी वस्तुओं की दुकानों पर धरना।
(iv) बंगाल प्रांत को इस तरीके से बाँटा गया, जिससे पश्चिमी बंगाल की जनसंख्या 3.40 करोड़ हो गई तथा पूर्वी बंगाल में 3.10 करोड़ जनसंख्या हो गई।
(v) शिक्षण संस्थानों की स्थापना तथा स्वदेशी आंदोलनों को बढ़ावा।

4. Examine the factors responsible for the emergence of Renaissance Movement in Europe.
यूरोप में पुनर्जागरण आंदोलन के उद्‌भव के कारणों का परीक्षण कीजिए।

- यूरोप मे पुनर्जागरण आंदोलन के उद्भव के निम्नलिखित कारण–
  (1) धर्मयुद्ध (क्रूसेड)– ईसाई धर्म के पवित्र तीर्थ स्थान जेरूसलम पर अधिकार को लेकर ईसाइयों एवं मुसलमानों के मध्य लड़े गए युद्ध के कारण यूरोपवासी पूर्वी देशों के सम्पर्क में आए तथा पूर्व का ज्ञान पश्चिम मे पहुँचा, जिससे विभिन्न आविष्कार हुए जैसे– कुतुबनुमा, वस्त्र बनाने की विधि, कागज और छापाखाना।
  (2) व्यापारिक समृद्धि– व्यापारिक समृद्धि से पुनर्जागरण की आर्थिक पृष्ठभूमि तैयार हुई।
  (3) धनी मध्यम वर्ग का उदय– वाणिज्य व्यापार से नए नगरों का उदय हुआ। उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए विद्वानों व कलाकारों को आश्रय दिया। जैसे– फ्लोरेंस का मैडिया परिवार।
  (4) अरब और मंगोल– 13वीं सदी के मध्य कुबलई खाँ ने विशाल मंगोल साम्राज्य स्थापित किया तथा एशिया यूरोप को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया।
  (5) एकालिस्टिक विचारधारा– इस विचारधारा ने धार्मिक विश्वास और तर्क दोनों का समन्वय किया।
  (6) कागज और छापाखाना – पुनर्जागरण को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान।
  (7) पुनर्जागरण को राजकीय संरक्षण प्राप्त होना।
  (8) ग्रीक से बुद्धिवादी पुस्तकों का आगमन।

RAS 2018 MAINS (GS-I)

1. The Indian Renaissance of the 19th century was the result of the challenges as well as the inspiration of the West. Examine critically.
19वीं शताब्दी का भारतीय पुनर्जागरण पश्चिम की चुनौती एवं प्रेरणा का परिणाम था। आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

- 19वीं शताब्दी का भारतीय समाज एक बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा था। भारतीय जनमानस में यह धारणा व्याप्त हो गई थी कि भारत के सामाजिक व सांस्कृतिक ढाँचे में निहित दुर्बलताओं के कारण ही भारत औपनिवेशिक शक्तियों के आधिपत्य में आया। 18वीं शताब्दी में हुए यूरोपियन प्रबोधन ने भारत के एक वर्ग को तर्कवाद, विज्ञानवाद तथा मानववाद से प्रभावित किया। भारत के इस नवीन शिक्षित वर्ग ने पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित होकर समाज की धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन की अंतर्निहित कमजोरियों को पहचान कर उसे दूर करने का प्रयास किया। इस तरह पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव तथा इन विदेशी

शक्तियों द्वारा पराजित होने की चेतना ने भारतीय जनमानस को नवजागरण हेतु प्रेरित किया।

- 'विलियम जोन्स' व 'मैक्समूलर' जैसे पश्चिमी विद्वानों ने भारत के विभिन्न प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन किया तथा इन ग्रंथों का अनुवाद कर भारतीय अतीत को प्रकाश में लाने का प्रयास किया। इससे भारतीय जनसामान्य में आत्मगौरव की भावना का प्रस्फुटन हुआ। पाश्चात्य चिंतन से प्रभावित होकर राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन, देवेन्द्रनाथ टैगोर, महादेव गोविन्द रानाडे, स्वामी विवेकानन्द आदि ने भारतीय समाज का पुनरुत्थान करने का प्रयास किया।
- सारांशतया भारतीय पुनर्जागरण ने भारत में सामाजिक धार्मिक सुधारों को प्रारम्भ किया। हालांकि यह सुधार प्रक्रिया औपनिवेशिक शासन की उपस्थिति का ही परिणाम थी परन्तु कहीं भी उपनिवेशी शासकों ने इसे प्रारम्भ नहीं किया।

2. Give an outline of the development of revolutionary freedom movement in 20th century India.

20वीं शताब्दी में भारतीय क्रान्तिकारी स्वतंत्रता आन्दोलन के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

- कांग्रेस की उदारवादी राजनीति तथा महात्मा गाँधी की अहिंसा नीति से मोहभंग होने पर अनेक भारतीय युवकों ने उग्रवादी सशस्त्र क्रांति का मार्ग चुना। यद्यपि क्रान्तिकारी आन्दोलन का प्रारम्भ 19वीं सदी के अंत में चापेकर बन्धुओं द्वारा पुणे प्लेग कमिश्नर की हत्या के साथ हुआ था तथापि इसके सांगठनिक प्रयास वर्ष 1920 के दशक में प्रारम्भ हुए। क्रांतिकारी आन्दोलन के विकास को निम्नलिखित दो चरणों से समझा जा सकता है-
  - **(i) प्रथम चरण–** कांग्रेस के उदारवाद से मोहभंग हुए युवाओं में सर्वप्रथम वी.डी सावरकर ने वर्ष 1904 में 'अभिनव भारत' की स्थापना की। इनके साथ ही इस काल में खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी द्वारा 'किंग्स फोर्ड' की हत्या का प्रयास, रासबिहारी बोस द्वारा दिल्ली षड्यंत्र, मदनलाल धींगरा द्वारा कर्जन वाइली की हत्या, हेमचन्द्र द्वारा कलकत्ता में बम निर्माण कारखाना खोलने तथा विदेशी धरती पर श्याम जी कृष्ण वर्मा की इंडिया होमरूल सोसायटी एवं वर्ष 1913 के गदर आंदोलन जैसे प्रयास प्रमुख हैं।
  - **(ii) द्वितीय चरण–** असहयोग आंदोलन को अचानक वापस लेने से निराश युवाओं ने हिंसात्मक मार्ग अपनाया। सर्वप्रथम रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी, सचिन्द्रनाथ सान्याल, अशफाक उल्ला खाँ व चन्द्रशेखर आजाद आदि ने वर्ष 1924 में 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' की स्थापना की तथा काकोरी काण्ड को अंजाम दिया। वर्ष 1928 में भगतसिंह के नेतृत्व में 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन' एसोसिएशन की स्थापना कर संगठित क्रांतिकारी कार्रवाई की रूपरेखा तैयार की गई। इनके द्वारा सांडर्स हत्या, असेम्बली में बम विस्फोट जैसी कार्रवाइयाँ की गई। इनके अतिरिक्त बंगाल में सूर्यसेन द्वारा चटगाँव शास्त्रागार लूट, प्रीतिलता वादेदार द्वारा रेलवे संस्थान पर छापा, सुनीति चौधरी द्वारा जिलाधिकारी की हत्या व बीना दास द्वारा गवर्नर पर गोली चलाने की घटनाएँ प्रमुख हैं।

3. Give a brief description of the following archaeological sites of Rajasthan -

(1) Bagore (2) Kalibangan
(3) Ahar

राजस्थान के निम्नलिखित पुरातात्त्विक स्थलों का संक्षिप्त विवरण दीजिए -

(1) बागोर (2) कालीबंगा
(3) आहड़

1. कालीबंगा सभ्यता

- हड़प्पाकालीन कालीबंगा सभ्यता हनुमानगढ़ जिले के घग्घर नदी के किनारे स्थित है, जिसकी खोज अमलानन्द घोष (1952 ई.) ने तथा उत्खनन बी.बी. लाल व बी.के. थापर (1961-69 ई.) द्वारा किया गया।
- इसमें मुख्यत: जुते हुए खेत, अग्निवेदियाँ, युग्मित शवाधान, बेलनाकार तंदूर, नगर नियोजन, भूकम्प के साक्ष्य, दो फसलों की खेती एक साथ, लकड़ी से बनी नालियाँ, ताम्र से बने कृषि औजार, कच्ची ईंटों के बने मकान आदि साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

2. आहड़ सभ्यता

- आहड़ सभ्यता को ताम्रनगरी, आघाटपुर व धूलकोट के नाम से भी जाना जाता है। यह उदयपुर जिले में बेड़च, बनास नदी के किनारे स्थित है, जिसका उत्खनन आर.सी. अग्रवाल (1956), एच.डी. सांकलिया तथा वी.एन. मिश्र द्वारा किया गया। यहाँ से मुख्यत: लाल, भूरे व काले मृदभाण्ड, संयुक्त परिवार, चूल्हे, ताँबे से बने औजार (कुल्हाड़ियाँ), पानी सोखने की विधि, बैल की मूर्ति आदि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

3. बागोर सभ्यता

- यह सभ्यता भीलवाड़ा जिले के कोठारी नदी के किनारे स्थित है, जिसका उत्खनन वीरेंद्र नाथ मिश्र द्वारा किया गया। यहाँ से मुख्यत: 14 प्रकार की कृषि व्यवस्था, ताँबे के उपकरण, पत्थर के बने मकान, लघु पाषाण उपकरण (ब्लेड, छिद्रक, स्केपर, चांद्रिक), नर कंकाल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। अर्थात् इस सभ्यता से पशुपालन, कृषि व आखेट के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

4. Discuss the impact of the World War II on international politics.

अन्तरराष्ट्रीय राजनीति पर द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभाव का विवेचन कीजिए।

- द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945 ई.) विश्व इतिहास का सर्वाधिक क्रूर, भयावह एवं विनाशकारी युद्ध था, जिसके अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर निम्नलिखित प्रभाव परिलक्षित होते हैं-
  - ➢ द्वितीय विश्व युद्ध ने वैश्विक पटल पर यूरोप के एकछत्र प्रभुत्व का अंत कर दिया। अब विश्व शक्ति के दो नए केन्द्र संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत संघ बन रहे थे।
  - ➢ साम्राज्यवाद के अंत की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इस युद्ध के कारण साम्राज्यवादी शक्तियाँ दुर्बल हुई, जिससे एशिया व अफ्रीका के पराधीन राष्ट्र स्वतंत्र होने लगे।
  - ➢ विश्व पटल पर शीत युद्ध का दौर प्रारम्भ हुआ तथा इसके साथ ही शस्त्रों की होड़ प्रारम्भ हुई।
  - ➢ चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई।
  - ➢ सोवियत रूस के प्रभाव से पूर्वी यूरोप में भी साम्यवादी सरकारों की स्थापना हो गई।
  - ➢ तृतीय विश्व के देशों के लिए एक नई विचारधारा गुटनिरपेक्षता का उद्भव हुआ।
  - ➢ प्रादेशिक संगठनों का प्रादुर्भाव हुआ। जिनमें नाटो एवं वारसा जैसे सैन्य संगठन तथा आसियान, सार्क, यूरोपीय आर्थिक संगठन जैसे प्रादेशिक सहयोग एवं विकासवादी संगठन प्रमुख है।
  - ➢ जर्मनी का विभाजन हुआ। जापान में राजतंत्र की समाप्ति हुई व लोकतंत्र की स्थापना हुई।
  - ➢ वैज्ञानिक आविष्कार में प्रगति हुई। कुछ आविष्कार लाभदायक रहे परन्तु कुछ के घातक परिणाम हुए।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

➢ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व दीर्घ स्थायी परिणाम था संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना।

RAS 2021 MAINS (GS-I)

1. Examine the significance of Charan Literature in Classical Literature of Rajasthan.
राजस्थान के शास्त्रीय साहित्य में चारण साहित्य की महत्ता का परीक्षण करें।

- चारण साहित्य की रचना मुख्य रूप से चारणों तथा चारणोत्पन्न जातियाँ– ब्रह्मभट्ट, भाट, ढाढी, ढोली, राव, सेवक, मोतीसर आदि के द्वारा की गई।
- राजपूत युग की वीरता और जनजीवन की झांकियाँ इसी साहित्य की देन है।
- अधिकांश साहित्य पद्य में है तथा डिंगल भाषा में लिखा गया है।
- वीर रस प्रधान है।
- विषयवस्तु– युद्धों और शौर्य के आख्यानों पर आधारित है।
- श्रृंगार रस के साथ राजपूत रमणियों के त्याग और बलिदान का भावात्मक वर्णन किया गया है।
- यह साहित्य प्रबंध काव्य, गीतों, दोहों, सोरठो, कुण्डलियों, छप्पयों, कवित्तों, झूलणों आदि के रूप में उपलब्ध है।

रचनाकार	प्रमुख रचनाएँ	विशेष
बादर ढाढी	वीर भायण	चारण शैली की प्रथम रचना। रावल मल्लीनाथ एवं उनके ज्येष्ठ पुत्र जगमाल की वीरता का वर्णन।
शिवदास गाडण	अचलदास खींची री वचनिका	माण्डू सुल्तान होशंगाशाह और गागरोन राजा अचलदास खींची के बीच युद्ध का वर्णन, राजपूत महिलाओं के जौहर का वर्णन।
कवि पद्मनाभ	कान्हड़दे प्रबंध	जालौर शासक कान्हड़दे एवं अल्लाउद्दीन खिलजी के बीच युद्धों का वर्णन, राजस्थान की भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक स्थिति?
चन्दबरदाई	पृथ्वीराज रासौ	पृथ्वीराज चौहान–III की वीरता व शौर्य।
मुहणोत नैणसी	नैणसी री ख्यात, मारवाड़ रा परगना री विगत	17वीं शताब्दी की राजनीतिक, भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन।
चारण कवि बाँकीदास	बाँकीदास री ख्यात	राजस्थान के इतिहास की जानकारी
सूर्यमल्ल मिश्रण (बूँदी के राजकवि)	वंश भास्कर वीर सतसई	बूँदी राज्य के इतिहास की जानकारी। 1857 की क्रांति के समय निष्क्रिय राजपूत शासकों को संगठित होकर ब्रिटिश सत्ता का मुकाबला करने के लिए प्रेरित।
केसरी सिंह बारहठ	चेतावनी रा चुंगटिया (तेरह सोरठे)	महाराणा फतेह सिंह को दिल्ली दरबार जाने से रोका। (1903 ई.)

- अन्य गीत कृतियों में ढोला मारू रा दूहा, गंगा जी रा दूहा, जवानी रा दूहा आदि दोहा संग्रह, राजिये रा सोरठा, हाला–झाला री कुण्डलियाँ, गजसिंह रा झूलणा, मयण रा कवित, करमसैण री झमाल, अमरसिंह रा सवैया आदि प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।
- राजस्थानी ग्रंथ साहित्य की समृद्धि का श्रेय चारण लेखकों को ही है। राजपूत शासकों ने चारणों को इतिहासकार, राजकवि एवं मंत्री जैसे पदों पर नियुक्त किया।

2. Discuss in brief the growth of the ideology of Theosophists in the Theosophical society in India.
भारत में थियोसोफिकल सोसायटी की विचारधारा के विकास में थियोसोफिस्ट के विचारों की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

- थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना न्यूयॉर्क शहर में सन् 1875 में मैडम हेलेना ब्लावात्स्की और कर्नल हेनरी ओस्कोट द्वारा की गई थी। भारत में इस सोसायटी की स्थापना सन् 1886 में अड्यार (मद्रास) में की गई तथा इसके पश्चात् मुख्यालय अड्यार को बनाया गया। सन् 1893 में श्रीमती एनी बेसेन्ट के नेतृत्व में थियोसोफिकल आंदोलन जल्द ही भारत में फैल गया।
- **थियोसोफिस्ट के विचार थे कि –**
  - ♦ हिंदुत्व, पारसी धर्म तथा बौद्ध मत आदि प्राचीन धर्मों को पुन: स्थापित किया जाए।
  - ♦ थियोसोफिस्टों ने आत्मा के पुनरागमन के सिद्धांत का भी प्रचार किया।
  - ♦ धार्मिक पुन: स्थापनावादियों के रूप में थियोसोफिस्टों को अधिक सफलता नहीं मिली।
  - ♦ थियोसोफिस्टों द्वारा चलाया गया आंदोलन भारतीय धर्म तथा दार्शनिक परम्परा का समर्थन करता था, जिससे भारतीयों को खोया आत्मविश्वास फिर से पाने में सहायता मिली।
  - ♦ भारत में एनीबेसेन्ट के प्रमुख कार्यों में से एक था बनारस में केन्द्रीय हिंदू विद्यालय की स्थापना, जिसे बाद में मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिंदू विश्व विद्यालय के रूप में विकसित किया।
  - ♦ सन् 1915 में एनीबेसेन्ट ने भारत में होमरूल लीग की स्थापना की।
  - ♦ एनीबेसेन्ट के विचारों को देव विज्ञान के नाम से भी जाना जाता था।
  - ♦ थियोसोफिकल सोसायटी की हिन्दू धर्म की व्याख्या पारम्परिक तथा रूढ़िवादी थी। इसके कई भारतीय नेता- डॉ. भगवान दास तथा एस सुब्रह्मण्यम् अय्यर हिन्दू रूढ़िवादिता के समर्थक थे, लेकिन इनके सामाजिक सिद्धांत प्रगतिशील तथा महत्त्वपूर्ण थे।

3. Discuss the development of Indigenous' industries in India during the Second World War.
द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारत में 'देशी' उद्योगों के विकास की विवेचना करें।

- दूसरे विश्वयुद्ध ने भारतीय जनता के लिए अभाव की स्थिति उत्पन्न कर दी परन्तु भारतीय व्यापारियों के लिए यह अत्यधिक लाभ का युग था। आपात लगभग समाप्त हो चुका था। सरकार की खरीद बहुत बढ़ चुकी थी, विशेषकर विदेशी आवश्यकता तथा युद्ध के कारण, अतएव इससे भारतीय पूँजीवाद को विकसित तथा समृद्ध होने का अवसर मिला।
- इस काल में विदेश से मशीनरी का आयात नहीं हो सका इसलिए बढ़े उद्योगों का बहुत विकास नहीं हो सका परंतु फिर भी बड़े व्यापारियों द्वारा स्टॉक कंपनियों, बैंक, बीमा कंपनियों की स्थापना की गई। इसी के साथ कई भारतीय–ब्रिटिश कंपनियाँ अर्थात् संयुक्त

कंपनियाँ प्रारंभ की गई। इसी प्रकार व्यापार का बहुमुखी विकास हुआ और सन् 1945 तक बड़े उद्योगों का विकास संभव हो सका।

- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान न केवल उद्योगों के औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई बल्कि औद्योगिक विविधीकरण का अधिक व्यापक विस्तार हुआ।
- आयातों में कमी तथा निर्यातों को बढ़ावा मिला जिससे भारतीय उद्योगों को एकाधिकार प्राप्त हुआ।
- पूर्व की तुलना में कारखानों डेढ़ गुना वृद्धि हुई तथा पटसन उद्योग में कमी दर्ज की गई।
- वर्ष 1940 में बोर्ड ऑफ साइंटिफिक एंड इण्डस्ट्रीरियल रिसर्च की स्थापना से उन क्षेत्रों की खोज हुई जो उद्योग क्षेत्र को बढ़ावा दे सके। जैसे– कास्टिक सोडा, औषधि, तार आदि।
- शस्त्र निर्माण एवं वायुयान के पुर्जे विकसित हुए।

4. "Industrial Revolution was not only a technological revolution, but a socio–economic revolution also, that changed the way people lived afterwards." Discuss.

"औद्योगिक क्रांति न केवल एक प्रौद्योगिकीय क्रांति थी, बल्कि एक सामाजिक–आर्थिक क्रांति भी थी, जिसने लोगों के उसके बाद रहने के ढंग को भी परिवर्तित कर दिया" विवेचना कीजिए।

औद्योगिक क्रांति

- औद्योगिक क्रांति से तात्पर्य उत्पादन प्रणाली में हुए मौलिक और बहुआयामी परिवर्तनों से हैं, जिसमें जन साधारण को परंपरागत कृषि, व्यवसाय एवं घरेलू उद्योग धंधों को छोड़कर वृहद् उद्योगों में काम करने तथा यातायात के नवीन साधनों का प्रयोग करने का अवसर मिला।
- प्रौद्योगिकीय क्रांति के तौर पर औद्योगिक क्रांति के दौरान कई आविष्कार हुए, जिससे उत्पादन एवं आपूर्ति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। इनमें वस्त्र उद्योग में हारग्रीव्ज की स्पीनिंग जैनी, आर्कराइट का वाटरफ्रेम, जॉन के का फ्लाइंग शटल तथा कार्टराइट का पॉवर लूम प्रमुख आविष्कार थे।
- इसी प्रकार लोहा एवं कोयला उद्योग में इब्राहिम डर्बी ने पत्थर के कोयले से लोहा गलाने की तकनीक खोजी।
- शक्ति के साधनों मे जेम्सवॉट के भाप इंजन ने औद्योगिक क्रांति की गति को कई गुणा बढ़ा दिया।
- नहर एवं सड़क निर्माण से परिवहन के क्षेत्र में क्रांति आई।
- **आर्थिक परिवर्तनों के कारण** वित्त की भूमिका पहले से बड़ी हो गई। संचार और यातायात में परिवर्तन से उद्योगों के चरित्र में परिवर्तन हुआ। हस्तशिल्प पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा वाणिज्यिक कृषि को बढ़ावा मिला। विदेशी व्यापार में तेजी आई तथा भूमण्डलीकरण का दौर प्रारंभ हुआ। कृषि के स्थान पर उद्योगों को प्राथमिकता मिलने लगी।
- औद्योगिक क्रांति से आई समृद्धि ने सरकारों के कर स्तर को सम्पन्न कर दिया, जिससे अवसंरचना विकास, सैनिक आधुनिकीकरण तथा कल्याणकारी योजनाएँ चलाने में सरकारें कामयाब हुई।
- सामाजिक स्तर पर शक्तिशाली मध्यमवर्ग का उभार हुआ, जिसने राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्था की स्थापना में सक्रिय भूमिका अदा की। विशेषाधिकारों का अंत हुआ। व्यापार, वाणिज्य तथा व्यवसाय में तीव्र वृद्धि से लोगों का शहरों की ओर पलायन बढ़ा, जिससे नगरीकरण को बढ़ावा मिला। नगरों में आवास की समस्याएँ पैदा हुई तथा पारिवारिक संरचना में बदलाव हुआ।
- क्रांति के प्रारंभ में मजदूर वर्ग का शोषण हुआ। अत: पूँजीवादी शोषण के विरुद्ध सामाजिक आंदोलनों को बल मिला, जिससे श्रमिकों को श्रमिक संघ बनाने के लिए प्रोत्साहन मिला।
- इस प्रकार औद्योगिक क्रांति ने प्रौद्योगिकीय, सामाजिक तथा आर्थिक स्तर पर आमूल-चूल परिवर्तन कर के लोगों के जीवन जीने के ढंग को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित किया।

RAS 2023 MAINS (GS-I)

1. राजस्थान सूर्य मन्दिरों संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए-
Give a brief description of Rajasthan Sun Temples-

उत्तर- राजस्थान में सूर्य उपासना की परम्परा 6 शताब्दी से ही काफी प्रसिद्ध रही हैं इतिहासकार ओझा के अनुसार 600-1400 ई. सिरोही लगभग सभी गांवों में सूर्य मंदिर थे। वर्तमान में सूर्य मंदिरों के खण्डर बचे है (बसंतगढ़ सूर्य मंदिर का केवल खंडर बचा है।)

राजस्थान में स्थिति प्रमुख सूर्य मंदिर-

1. **ओसिया का सूर्य मंदिर-** यह मंदिर ओसिया, जोधपुर में स्थित है, निर्माण काल- 8 – 9 शताब्दी शैली- गुर्जर-प्रतिहार शैली में बना है सूर्य देव की भव्य प्रतिभा और सुंदर नक्काशी इसके प्रमुख आकर्षक है।
2. **गलता पहाड़ी का सूर्य मंदिर-** जयपुर का राजपरिवार सूर्यवंशी होने के कारण सूर्य भगवान की उपासना करता है इसलिए यह मंदिर राजपरिवार के लिए महत्त्वपूर्ण है यहा मकर सक्रांति पर विशेष भीड़ रहती है।
3. **झालावाड़ का सूर्य मंदिर-** यह मंदिर झालावाड़ के झालरापाटन में स्थित है इसे पद्मनाथ मंदिर और सात सहेलियों का मंदिर भी कहा जाता है इसका निर्माण 10वीं शताब्दी में मालवा के परमार शासकों ने करवाया।
4. **रणकपुर सूर्य मंदिर-** यह मंदिर पाली जिले के रणकपुर जैन मंदिर परिसर में स्थित है यह छोटा मंदिर है परन्तु इस मंदिर में सूर्य देव की मूर्ति रथ पर सवार दिखाई देती है।
   अन्य सूर्य मंदिर- वरमान सूर्य मंदिर। ब्राह्मण स्वामी का मंदिर, चित्तौड, मटारिया सूर्य मंदिर बाड़मेर।

2. विश्व की संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति की निरन्तरता एक अन्यय विशिष्टता है। व्याख्या कीजिए।
Continuity of Indian culture is another speciality among the cultures of the world. Explain.

उत्तर-

1. **भारतीय संस्कृति** में समय-समय पर नए विचारों को आत्मसात करने की क्षमता।
   यही कारण है कि बदलते समय में भी अपनी मौलिकता को बनाए रखी।
2. **प्रचीनता व गहराई :** भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत जैसे ग्रन्थों ने इसकी नींव को मजबूत बनाया है।
3. **धर्म व आध्यात्मिकता-** भारतीय संस्कृति में धर्म व आध्यात्मिकता को अत्यंत महत्त्व दिया गया है । यह संस्कृति

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

जीवन के हर पक्ष को धर्म से जोड़ती है जिससे लोगों में सास्कृतिक जुड़ाव बना रहता है।

4. **एकता में अनेकता-** भारतीय विविधता में एक गहरी सांस्कृतिक एकता है जो इसे समावेशी बनाती है।
5. **गुरु शिष्य परम्परा-** यह परम्परा संस्कृति को निरंतर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
6. **त्योहार व परम्पराए –** भारत में अनेक त्योहार ओर परम्पराएँ पूरे साल भर चलते है जिससे लोगों में सांस्कृतिक जुड़ाव बना रहता है।
7. **संस्कार व पारिवारिक मूल्य-** भारतीय समाज में संस्कारों व पारिवारिक मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। ये पीढ़ी दर-पीढ़ी संस्कृति को आगे बढ़ाने में सहायक है।
8. **अनुकूलनशीलता-** भारतीय संस्कृति ने समय के अनुसार बदलती रही साथ में मूल आत्मा को बनाए रखती है।

3. मौर्य स्तम्भ देशज मूल के हैं। व्याख्या कीजिए।
Explain that Mauryan pillars are of indigenous origin.

उत्तर- मौर्य स्तम्भ मौर्य काल (322 ई.पू. – 185 ई.पू.) में निर्मित स्तम्भ है जो भारतीय वास्तुकला की अनोखी विशेषता है इन स्तम्भों का निर्माण अशोक सम्राट द्वारा करवाया गया। इसलिए जब हम यह कहते हैं मौर्य स्तम्भ देशज मूल के है तो इससे तात्पर्य है इन स्तम्भों के निर्माण तकनीक व प्रेरणा मूलत: भारतीय परम्परा से जोड़ी हुई है न की विदेशी परम्परा से।

मौर्य स्तम्भ देशज मूल के है इसके प्रमुख कारण-

1. प्राचीन परम्पराओं का विकास- भारत में प्राचीन काल से विभिन्न धार्मिक चिह्नों को स्तम्भ रूप से पूजने की पम्परा पहले से ही थी। मौर्य स्तम्भ देशज परम्परा का विकसित रूप है।
2. स्थानीय वास्तुकला- इन स्तम्भों को एकाश्मक पत्थर पर बनाया जाता था जो भारतीय शिल्पकारों की परम्परागत तकनीकी का परिचालक है।
3. भारतीय प्रतीक चिह्नों का प्रयोग- इन स्तम्भों पर विभिन्न भारतीय प्रतीक चिह्नों जैसे- सिंह, हाथी बैल व अशोक चक्र का प्रयोग किया गया है। ये प्रतीक देशज सोच व धार्मिक भावना का प्रतिनिधित्व करते हैं।
4. धर्म प्रसार का भारतीय तरीका- बौद्ध धर्म के नैतिक मूल्य व धर्म प्रसार को समर्पित थे जो भारतीय परम्परा में लोकहित संदेश के प्रसार का विशिष्ट तरीका था।

4. यूरोपीय औद्योगिक क्रांति ने अन्तत: नव साम्राज्यवाद को जन्म दिया। वर्णन कीजिए –
The European industrial revolution ultimately gave birth to neo-imperialism. Describe –

उत्तर- यूरोपीय औद्योगिक क्रांति विश्व की प्रमुख घटनाओं में से एक थी जिसने दुनिया में उत्पादन विधियो, आर्थिक संरचनाओं और वैश्विक शक्ति संतुलन को पूरी तरह बदल दिया। इस क्रांति ने न केवल यूरोप की आन्तरिक स्थिति को बदला, बल्कि विश्व के अन्य भागों पर यूरोपीय नियंत्रण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया जिसे नव साम्राज्यवाद कहा जाता है।

यूरोपीय औद्योगिक क्रांति ने किस प्रकार नवसाम्राज्यवाद जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई पक्ष में तर्क-

1. सभी यूरोपीय देशों का आपस में प्रतियोगी होना इसके नवसाम्राज्यवाद को तीव्रता रूप से बढ़ावा मिला।
2. आर्थिक उदारवाद- यूरोपीय औद्योगिक क्रान्ति से आर्थिक उदारवाद को बढ़ावा मिला तथा जिसमें नवसाम्राज्यवाद का जन्म हुआ।
3. मुक्त व्यापार दृष्टिकोण का जन्म हुआ जिसमें यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियां समुद्र पार व्यापार करने जाने लगी तथा क्रमिक रूप से साम्राज्यवाद व नवसाम्राज्यवाद का जन्म हुआ।
4. इसाई धर्म प्रसांरको की भूमिका- धर्म प्रचार-प्रसार का दृष्टिकोण साथ ही साम्राज्यवादी व नवसाम्राज्यवादी स्थापना का दृष्टिकोण बना।
5. प्रौद्योगिकी व सैन्य शक्ति- औद्योगिक क्रांति से यूरोप प्रौद्योगिकी व सैन्य शक्ति के रूप में उभरा जिससे साम्राज्यवाद व नवसाम्राज्यवाद को आसान बना दिया।
6. कच्चे माल आवश्यकता।
7. बाजार की खोज।

RAS 2024 MAINS (GS-I)

1. मध्यकालीन राजस्थान की राजस्व व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर-

- मध्यकालीन राजस्थान की राजस्व व्यवस्था मुख्यतः जागीरदारी प्रणाली पर आधारित थी, जिसमें भूमि और कृषि से प्राप्त राजस्व ही राज्य की आर्थिक शक्ति का आधार था।
- इस व्यवस्था में राजस्व संग्रह के लिए विभिन्न प्रकार की भूमियां और कराधान की श्रेणियां निर्धारित थीं।
- राजस्व का उपयोग प्रशासनिक खर्च, सेना के संवर्धन, सार्वजनिक कार्यों और महलों के निर्माण पर होता था।

राजस्व प्रणाली के प्रमुख तत्व

- **भूमि वर्गीकरण एवं स्वामित्व**

मध्यकालीन राजस्थान (8वीं-18वीं शताब्दी) में भूमि को खालसा (राजकीय प्रत्यक्ष राजस्व), जागीर (सैन्य सेवा के बदले सामंतों को), भोम (करमुक्त, आपातकालीन सेवा) तथा सासन (धार्मिक/ब्राह्मण अनुदान) में वर्गीकृत किया गया। जागीरें उत्तराधिकार, विवाह, युद्ध विजय या निष्ठा पर दी जाती थीं, परंतु हस्तांतरण हेतु राजकीय अनुमति अनिवार्य थी।

राजस्व निर्धारण विधियाँ

- **भू-राजस्व की प्रमुख प्रथाएँ:** रेख (सामंतों द्वारा अनुमानित राजकीय हिस्सा), पट्टा रेख (नकद अनुमान), भराई रेख (वास्तविक वसूली), बीघोड़ी (उर्वरता आधारित प्रति बीघा), डोरी (नापी भूमि), मुकाता (निश्चित ठेका), घूघरी (बीजानुपात 1:5-10), हल प्रणाली (15-30 बीघा प्रति हल)। पूर्वी राजस्थान में भेज (नकद), बीकानेर में भींत की भाछ (घर संख्या आधारित); लगान 1/4 से 1/2 उपज।

अन्य कर एवं शुल्क

- सामंतों से उत्तराधिकार शुल्क (मृत्यु पर 1/5 जागीर), नजराना (विजय/विवाह), चाकरी (सेवा), न्यौत (भेंट); किसानों से हकबना (पशु कर), पशमीना (भेड़ कर), घोड़सवार (घोड़ा कर)। अकाल में तखफीफ (छूट) प्रचलित।

प्रशासनिक संरचना

- दीवान (मुख्य राजस्व अधिकारी), आमिल (परगना संग्रह), हाकिम (न्याय-राजस्व), साहणे (भाग निर्धारण), तफेदार/पटवारी (ग्राम रिकॉर्ड), सायर दरोगा (सीमा शुल्क)। यह विकेंद्रीकृत सामंतवादी व्यवस्था थी, जहाँ राजा सर्वोच्च स्वामी था।

2. वर्ण व्यवस्था एवं प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक आन्दोलनों एवं मध्यकालीन भारत के निर्गुण भक्ति आन्दोलन के मध्य समानताओं को रेखांकित कीजिए।

उत्तर-

– छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक आंदोलनों (विशेषकर बौद्ध धर्म और जैन धर्म) और मध्यकालीन भारत के निर्गुण भक्ति आंदोलन (कबीर, नानक, रैदास आदि) के बीच वर्ण व्यवस्था एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष में गहरी समानताएँ पाई जाती हैं :

- **जातिगत समानता:** दोनों ने जन्म आधारित जाति व्यवस्था और ब्राह्मणवादी वर्चस्व का सीधा विरोध किया। उन्होंने मोक्ष/मुक्ति का मार्ग सभी वर्गों, विशेषकर निम्न माने जाने वाले वर्गों, के लिए खोला।
- **कर्मकांड का खंडन:** दोनों आंदोलनों ने खर्चीले यज्ञों, मूर्ति पूजा, और तीर्थ यात्रा जैसे बाह्य आडंबरों और जटिल कर्मकांडों को निरर्थक माना, आंतरिक शुद्धता और नैतिक आचरण पर बल दिया।
- **पुरोहितों की अस्वीकृति:** दोनों ने धार्मिक मामलों में पुरोहितों की मध्यस्थता को अस्वीकार किया, व्यक्ति को सीधे अपने लक्ष्य से जुड़ने का सरल मार्ग सुझाया।
- **जनभाषा का प्रयोग:** दोनों ने संस्कृत जैसी अभिजात भाषा के बजाय लोकप्रिय भाषाओं (पालि/प्राकृत और सधुक्कड़ी/क्षेत्रीय बोलियाँ) का प्रयोग किया, जिससे उनका संदेश आम जन तक पहुँचा।

3. भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी तीन दशकीय भागीदारी के दौरान महात्मा गांधी प्रत्येक पीढ़ी हेतु प्रासंगिक थे। समुचित उदाहरणों सहित विवेचना कीजिए।

उत्तर-

– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी की तीन दशकीय (1917-1947) भागीदारी उन्हें प्रत्येक पीढ़ी के लिए प्रासंगिक बनाती थी, क्योंकि उन्होंने राजनीतिक विरोध को सामाजिक-आर्थिक उत्थान के व्यापक दर्शन से जोड़ा।

विभिन्न पीढ़ियों हेतु प्रासंगिकता

– **युवा पीढ़ी:** गांधीजी ने सत्याग्रह के माध्यम से युवाओं को निष्क्रियता के बजाय नैतिक साहस और सक्रिय संघर्ष का मार्ग दिया। असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में बड़ी संख्या में छात्रों ने भागीदारी की, जिससे नेहरू और बोस जैसे युवा नेता राष्ट्रीय पटल पर उभरे।

– **मध्यम एवं पेशेवर वर्ग:** अहिंसा आधारित आंदोलन ने इस वर्ग को विरोध का एक सुरक्षित और नैतिक माध्यम दिया। खादी और अस्पृश्यता निवारण जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों ने पेशेवरों और व्यापारियों को समाज उत्थान से जोड़ा, जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुए।

– **किसान एवं महिलाएँ:** गांधीजी ने इन वंचित वर्गों को पहली बार राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्य हिस्सा बनाया। चंपारण/खेड़ा (किसानों) और नमक सत्याग्रह (महिलाओं) जैसे उदाहरणों के माध्यम से उन्होंने इन्हें राजनीतिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया।

– महात्मा गांधी की प्रासंगिकता उनकी इस क्षमता में निहित थी कि उन्होंने स्वतंत्रता को नैतिक शुद्धि और आर्थिक आत्मनिर्भरता से जोड़ा।

4. चीन के साम्राज्यवादी शोषण में अफीम की महत्ती भूमिका रही। विवेचना कीजिए।

उत्तर-

– 19वीं शताब्दी में चीन के शोषण की नींव में 'अफीम' सबसे प्रमुख कारक था, जिसने चीन को 'अपमान की सदी' में धकेल दिया।

चीन के शोषण में अफीम की भूमिका

- **व्यापार असंतुलन को पाटना:** 18वीं सदी में चीनी चाय और रेशम की भारी मांग के कारण ब्रिटेन को चीन को चांदी में भुगतान करना पड़ता था। इस घाटे को दूर करने के लिए, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत से उगाई गई अफीम को अवैध रूप से चीन में बेचना शुरू कर दिया।
- **त्रिकोणीय व्यापार और आर्थिक पतन:** अफीम की बिक्री से प्राप्त चांदी से चीनी सामान खरीदकर, ब्रिटेन ने चांदी का प्रवाह चीन से बाहर अपनी ओर मोड़ लिया। इससे चीन की अर्थव्यवस्था चरमरा गई और उसका खजाना खाली हो गया।
- **सामाजिक-नैतिक पतन:** अफीम की लत ने लाखों चीनी नागरिकों को शारीरिक और मानसिक रूप से अपंग बना दिया, जिससे सेना और प्रशासनिक कार्यक्षमता गंभीर रूप से कमजोर हो गई। भ्रष्टाचार बढ़ा और समाज खोखला हो गया।
- **अफीम युद्ध और संप्रभुता का हनन:** जब चीनी अधिकारियों ने अफीम तस्करी का विरोध किया, तो ब्रिटेन ने 'स्वतंत्र व्यापार' के नाम पर प्रथम (1839-42) और द्वितीय (1856-60) अफीम युद्ध थोप दिए। युद्धों में हार के बाद, चीन को नानकिंग की अपमानजनक संधि (जैसे हांगकांग सौंपना और पाँच बंदरगाह खोलना) पर हस्ताक्षर करने पड़े।

अफीम साम्राज्यवाद का क्रूर उपकरण सिद्ध हुआ, जिसने चीन को एक अर्ध-उपनिवेश (Semi-colony) में बदल दिया।

❑❑❑

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119